खण्ड-418, अंक-1
गुरुवार, 6 चैत्र, शक संवत् 1918
(27 मार्च, 1997 ई0)

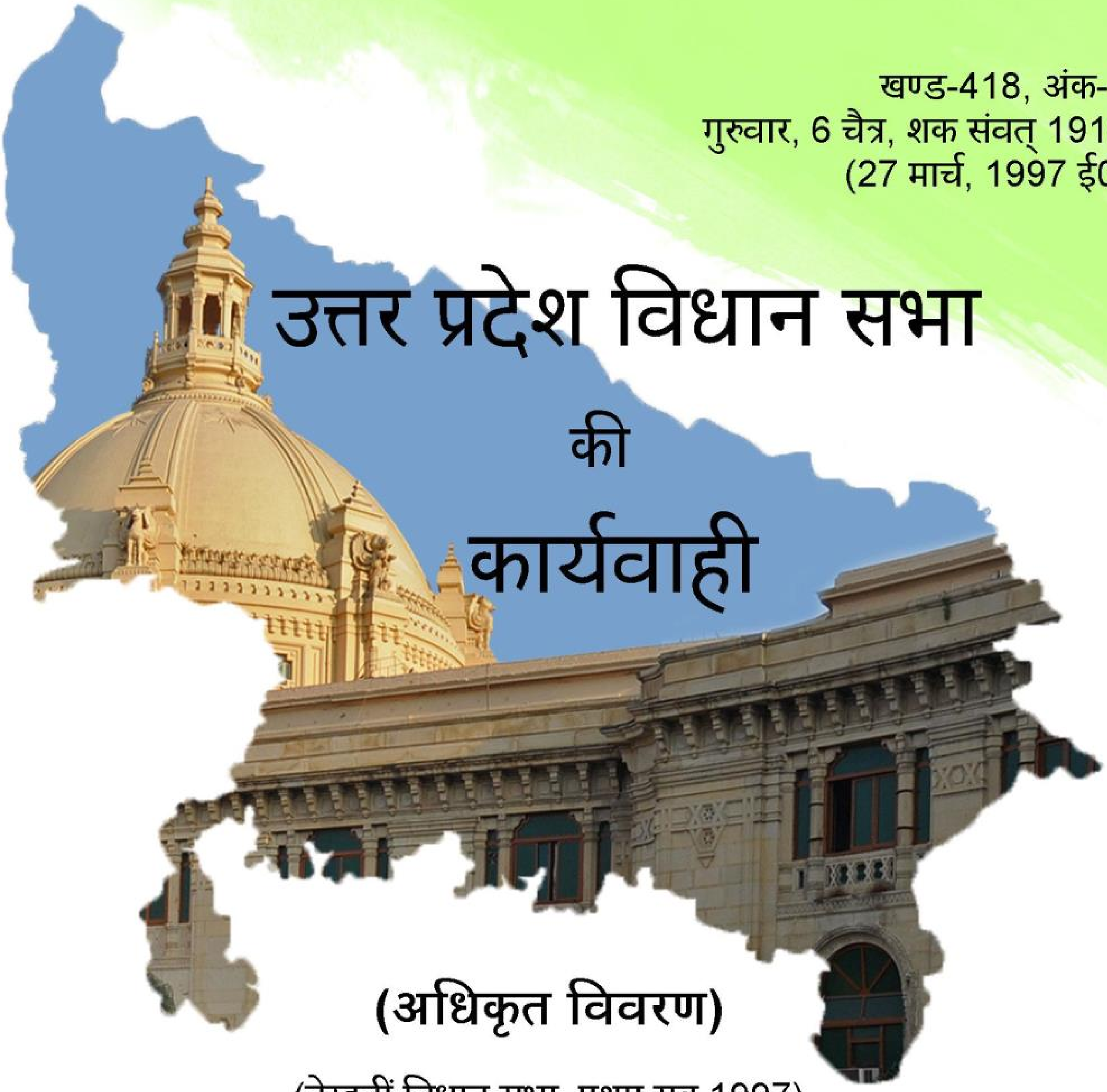

उत्तर प्रदेश विधान सभा

की

कार्यवाही

(अधिकृत विवरण)

(तेरहवीं विधान सभा, प्रथम सत्र 1997)

खण्ड 418 में 6 अंक है

उत्तर प्रदेश विधान सभा सचिवालय (कार्यवाही अनुभाग) द्वारा प्रकाशित

मुद्रक:
निदेशक, राजकीय मुद्रण एवं लेखन सामग्री, लखनऊ, उत्तर प्रदेश (भारत)
1997

मूल्य : बिना महसूल 25 पैसे, महसूल सहित 31 पैसे |
वार्षिक चन्दा : बिना महसूल 10 रुपये, महसूल सहित 12 रुपये |

विषय सूची

विषय	पृष्ठ संख्या
उत्तर प्रदेश विधान सभा के सदस्यों की सूची ...	क–छ
श्री राज्यपाल, मंत्रिपरिषद्, नेता विरोधी दल उत्तर प्रदेश विधान सभा के पदाधिकारी तथा अधिष्ठाता मण्डल	झ–ठ
उपस्थित सदस्य	ड–त
अध्यक्ष पद के कर्तव्यों का पालन करने के लिये श्री राज्यपाल द्वारा श्री कल्याण सिंह सदस्य विधान सभा की नियुक्ति की सूचना ...	1
विधान सभा अध्यक्ष का निर्वाचन तथा नव निर्वाचित अध्यक्ष श्री केशरी नाथ त्रिपाठी को बधाई	1-21

उत्तर प्रदेश विधान सभा

उत्तर प्रदेश विधान सभा

उत्तर प्रदेश विधान सभा के सदस्यों की सूची

(तेरहवीं विधान सभा)

1–अकबर हुसैन, श्री — मुरादाबाद
2–अक्षयवर लाल, श्री — बहराइच
3–अखिलेश कुमार सिंह, श्री — रायबरेली
4–अजय कुमार पोइया, श्री — मथुरा
5–अजय प्रताप सिंह उर्फ लल्ला भइया, श्री — गोण्डा
6–अजय भट्ट, श्री — अल्मोड़ा
7–अजय राय, श्री — वाराणसी
8–अजित कुमार मेहरोत्रा, श्री — सीतापुर
9–अतीक अहमद, श्री — इलाहाबाद
10–अतुल कुमार, श्री — मेरठ
11–अनिल कुमार, श्री — बलिया
12–अनीस खां, श्री — पीलीभीत
13–अफजाल अंसारी, श्री — गाजीपुर
14–अफजाल अहमद, श्री — जौनपुर
15–अफरोज अली खां, श्री — रामपुर
16–अब्दुल कलाम, श्री — बस्ती
17–अब्दुल कलाम, श्री — वाराणसी
18–अब्दुल खालिक, श्री — अलीगढ़
19–अब्दुल मन्नान, श्री — हरदोई
20–अमर मणि, श्री — महराजगंज
21–अमित अग्रवाल, श्री — मेरठ
22–अमीर आलम खान, श्री — मुजफ्फरनगर
23–अम्बरीष कुमार, श्री — हरिद्वार
24–अम्बिका चौधरी, श्री — बलिया
25–अम्मार रिजवी, डा० — सीतापुर
26–अयोध्या प्रसाद पाल, श्री — फतेहपुर
27–अरविन्द कुमार जैन, श्री — ललितपुर
28–अरविन्द गिरि, श्री — खीरी
29–अरिमर्दन सिंह, श्री — महोबा
30–अरुण प्रताप सिंह, श्री — सुल्तानपुर
31–अरुणवीर सिंह, श्री — बहराइच
32–अवधेश प्रसाद, श्री — फैजाबाद
33–अशफाक अहमद, श्री — बरेली
34–अशोक कुमार, श्री — जौनपुर
35–अशोक कुमार सिंह, श्री — रायबरेली
36–अशोक बाजपेई, डा० — हरदोई
37–अशोक यादव, श्री — फिरोजाबाद
38–आनन्द प्रकाश, श्री — पडरौना
39–आर० के० चौधरी, श्री — लखनऊ
40–आलमबदी, श्री — आजमगढ़
41–इकबाल महमूद, श्री — मुरादाबाद
42–इन्द्रजीत सरोज, श्री — इलाहाबाद
43–इन्द्रदेव, श्री — बिजनौर
44–इल्म सिंह, श्री — सहारनपुर
45–उदय राज यादव, श्री — उन्नाव
46–उमाकान्त यादव, श्री — जौनपुर
47–उर्मिला देवी, श्रीमती — मैनपुरी
48–उवैदुर्रहमान, श्री — गोण्डा
49–ओइम्वेश, स्वामी — बिजनौर
50–ओंकार सिंह, श्री — एटा
51–ओमकार सिंह, श्री — बदायूं
52–ओम प्रकाश, श्री — एटा
53–ओम प्रकाश, श्री — गाजीपुर
54–ओम प्रकाश गुप्त, श्री — सीतापुर
55–ओम प्रकाश सिंह, श्री — मिर्जापुर
56–ओमवती देवी, श्रीमती — बिजनौर
57–कमला प्रसाद रावत, श्री — बाराबंकी
58–कल्याण सिंह, श्री — अलीगढ़
59–कवर पाल सिंह मास्टर, श्री — सहारनपुर

उत्तर प्रदेश विधान सभा

60-काजिम अली खां उर्फ नवाब मियां, श्री रामपुर
61-काजी मोहम्मद मुहिउद्दीन, श्री हरिद्वार
62-काशिम हसन, श्री फतेहपुर
63-काशीनाथ, श्री सुल्तानपुर
64-किशन लाल बघेल, सेठ आगरा
65-कृष्ण शंकर सिंह, श्री उन्नाव
66-कृष्ण चन्द्र पुनेठा, श्री पिथौरागढ़
67-कृष्णा राज, श्रीमती खीरी
68-केदार सिंह फोनिया, श्री चमोली
69-केशरी नाथ त्रिपाठी, श्री इलाहाबाद
70-केशो मेहरा, श्री आगरा
71-के० सी० सिंह, "बाबा" उधम सिंह नगर
72-कैलाश, श्री गाजीपुर
73-कैलाश सिंह राजपूत, श्री फर्रुखाबाद
74-कौकब हमीद, श्री मेरठ
75-कोविद कुमार, श्री शाहजहांपुर
76-कौशल किशोर, डा० खीरी
77-गंगा प्रसाद पुष्कर, श्री आगरा
78-गंगा बख्श सिंह, श्री उन्नाव
79-गंगा सिंह चौहान, श्री हरदोई
80-गजेन्द्र कुमार मुन्ना, श्री मेरठ
81-गणेश, श्री गाजीपुर
82-गुलाब देवी, श्रीमती मुरादाबाद
83-गोपाल कृष्ण, श्री पीलीभीत
84-गोमती यादव, श्री लखनऊ
85-गोरखनाथ पाण्डेय, श्री भदोही
86-गौरी देवी, श्रीमती गोरखपुर
87-गौरी शंकर एडवोकेट, श्री लखनऊ
88-चन्द्र किशोर, श्री महराजगंज
89-चन्द्र नाथ सिंह, श्री प्रतापगढ़
90-चन्द्र पाल सिंह यादव, श्री झांसी
91-चन्द्रमणि कान्त सिंह, श्री बहराइच
92-चन्द्रेश पासवान, श्री गोरखपुर
93-चैनराम, श्री शाहजहांपुर
94-छब्बू पटेल, श्री वाराणसी
95-छोटे लाल वर्मा, डा० महोबा
96-छोटे लाल, श्री हरदोई
97-छोटे लाल गंगवार, मास्टर बरेली
98-छोटे लाल राजभर, श्री बलिया
99-छोटे सिंह यादव, श्री फर्रुखाबाद
100-जगत पाल सिंह, मेजर मुरादाबाद
101-जगदम्बिका पाल, श्री बस्ती
102-जगदीश नारायण (मुन्ना), श्री जौनपुर
103-जगदीश सिंह राणा, श्री सहारनपुर
104-जटा शंकर, श्री बहराइच
105-जमालुद्दीन सिद्दीकी, श्री फर्रुखाबाद
106-जय नारायन तिवारी, श्री सुल्तानपुर
107-जयपाल सिंह, श्री मेरठ
108-जय प्रकाश, श्री गाजियाबाद
109-जय प्रकाश निषाद, श्री देवरिया
110-जय प्रताप सिंह, श्री सिद्धार्थनगर
111-जयवीर सिंह भदौरिया, श्री इटावा
112-जितेन्द्र कुमार जायसवाल उर्फ पप्पू भइया गोरखपुर
113-जोखू लाल यादव, श्री इलाहाबाद
114-ज्ञान चन्द, श्री उत्तरकाशी
115-ज्ञानवती, श्रीमती अलीगढ़
116-ज्ञानेन्द्र सिंह, श्री महराजगंज
117-ज्वाला प्रसाद यादव, श्री जौनपुर
118-तारकेश्वर प्रसाद शुक्ल, श्री गोरखपुर
119-तिलकराज बेहड़, श्री उधम सिंह नगर
120-तेजभान सिंह, श्री सुल्तानपुर
121-तोताराम, श्री मुरादाबाद
122-तौफीक अहमद, श्री सिद्धार्थनगर
123-ददू प्रसाद, श्री बांदा
124-दयाशंकर, श्री जालौन

125-दल बहादुर कोरी, श्री — रायबरेली
126-दलवीर सिंह, श्री — अलीगढ़
127-दिलीप कुमार, श्री — बहराइच
128-दिवाकर विक्रम सिंह, श्री — सिद्धार्थनगर
129-दीपक कुमार, श्री — [illegible]
130-दीप लाल भारतीय, श्री — [illegible]
131-दुर्गा प्रसाद, श्री — [illegible]
132-देवेन्द्र सिंह उर्फ भोले सिंह, श्री — कानपुर देहात
133-देवेन्द्र सिंह यादव, कुंवर — एटा
134-धनराज यादव, श्री — सिद्धार्थनगर
135-धनीराम वर्मा, श्री — इटावा
136-धर्मेश मिश्र, श्री — हरदोई
137-धर्मपाल सिंह, श्री — बरेली
138-धर्मराज निषाद, श्री — अम्बेडकर नगर
139-नन्दराम, श्री — [illegible]
140-नरेन्द्र, श्री — आजमगढ़
141-नरेन्द्र कुमार सिंह गौर, डा० — [illegible]
142-नरेन्द्र सिंह चौधरी, श्री — कानपुर देहात
143-नरेन्द्र सिंह भाटी, श्री — बुलन्दशहर
144-नरेन्द्र सिंह यादव, श्री — फर्रुखाबाद
145-नरेन्द्र सिंह सिसौदिया, श्री — गाजियाबाद
146-नरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री — हरदोई
147-नवाब सिंह नागर, श्री — गाजियाबाद
148-नारायण राम दास, श्री — [illegible]
149-निर्भय पाल शर्मा, श्री — [illegible]
150-नीरज चतुर्वेदी, श्री — कानपुर नगर
151-नेतराम सिंह, श्री — एटा
152-परमानन्द दण्डी, स्वामी — [illegible]
153-परवेज हनीफ खां, श्री — मेरठ
154-पारसनाथ यादव, श्री — जौनपुर
154-A-पीटर पैन्थम, श्री — नाम निर्देशित सदस्य
155-पीतम राम, श्री — पीलीभीत
156-पूरन सिंह बुन्देला, श्री — ललितपुर
157-पूर्णमासी पंकज, श्री — भदोही
158-प्रदीप कुमार, श्री — मुजफ्फरनगर
159-प्रभु नारायण, श्री — वाराणसी
160-प्रमोद कुमार, श्री — प्रतापगढ़
161-प्रेम पाल सिंह यादव, श्री — बदायूं
162-प्रेम प्रकाश, श्री — देवरिया
163-प्रेम लता कटियार, श्रीमती — कानपुर नगर
164-प्रेम स्वरूप पाठक, श्री — बदायूं
165-फतेह बहादुर, श्री — महराजगंज
166-फरीद महफूज किदवई, श्री — बाराबंकी
167-फागू, श्री — मऊ
168-बंश नारायण सिंह, श्री — भदोही
169-बंशीधर भगत, श्री — नैनीताल
170-बलभूराम पटेल, श्री — वाराणसी
171-बल्ला पाठक, श्री — [illegible]
172-बनवारी लाल दोहरे, श्री — फर्रुखाबाद
173-बनारसी दास चन्दना, श्री — मेरठ
174-बांके लाल सोनकर, श्री — जौनपुर
175-बादशाह सिंह, श्री — हमीरपुर
176-बाबू खां, श्री — हरदोई
177-बाबू राम, श्री — जालौन
178-बाबू राम यादव, श्री — मैनपुरी
179-बाबू लाल, श्री — आगरा
180-बाबू लाल, श्री — उन्नाव
181-बाबू लाल कुशवाहा, श्री — बांदा
182-बाल चन्द्र मिश्र, श्री — कानपुर नगर
183-बालेश्वर त्यागी, श्री — गाजियाबाद
184-बाचन सिंह, श्री — गोण्डा
185-बिजेन्द्र आर्य, श्री — मुजफ्फरनगर
186-बिन्दु लाल, श्री — गोण्डा
187-बिहारी लाल आर्य, श्री — झांसी
188-बुनियाद हुसैन अंसारी, श्री — सीतापुर
189-बैचन राम, श्री — गोरखपुर

190–ब्रजेन्द्र पाल सिंह, श्री — मुरादाबाद
191–भगवती प्रसाद, श्री — कानपुर देहात
192–भगवान सिंह शाक्य, श्री — बदायूं
193–भरत सिंह, श्री — बलिया
194–भाई लाल, श्री — मिर्जापुर
195–भारत सिंह रावत, श्री — गढ़वाल
196–भीम प्रसाद, श्री — अम्बेडकर नगर
197–भोनू, श्री — गाजीपुर
198–भोला शंकर मौर्य, श्री — बदायूं
199–मंगल सिंह, श्री — मुरादाबाद
200–मंजू, श्रीमती — बलिया
201–मण्डलेश्वर सिंह, श्री — आगरा
202–मनेश चन्द्र सोनकर, श्री — इलाहाबाद
203–मथुरा प्रसाद, श्री — कानपुर देहात
204–मलखान सिंह, श्री — अलीगढ़
205–मस्तराम, श्री — उन्नाव
206–महाराज सिंह यादव, श्री — इटावा
207–महेन्द्र अरिदमन सिंह, राजा — आगरा
208–महेन्द्र कुमार, श्री — बुलन्दशहर
209–महेन्द्र कुमार, श्री — सीतापुर
210–महेन्द्र नाथ पाण्डेय, डा० — वाराणसी
211–महेन्द्र पाल निषाद, श्री — बांदा
212–महेन्द्र सिंह यादव, श्री — बुलन्दशहर
213–मानवर सिंह कण्डारी, श्री — टिहरी गढ़वाल
214–मानिक चन्द यादव, श्री — मैनपुरी
215–मायावती, सुश्री — खीरी
216–मायावती, सुश्री — सहारनपुर
217–मारकण्डेय चन्द, श्री — गोरखपुर
218–मित्रसेन यादव, श्री — फैजाबाद
219–मिथलेश कुमारी, श्रीमती — एटा
220–मुख्तार अन्सारी, श्री — मऊ
221–मुन्ना चौहान, श्री — देहरादून
222–मुन्ना लाल मौर्य, श्री — फतेहपुर
223–मुरलीधर, श्री — फतेहपुर
224–मुराद लारी, श्री — देवरिया
225–मुस्ताक सोलंकी, श्री — कानपुर नगर
226–मुस्लिम, डा० — रायबरेली
227–मुहर सिंह अम्बाडी, श्री — इटावा
228–मूल चन्द, श्री — बिजनौर
229–मोती लाल, श्री — खीरी
230–मोहन सिंह रावत गांववासी, श्री — गढ़वाल
231–मोहम्मद मुकीम, श्री — सिद्धार्थनगर
232–यशपाल सिंह चौहान, श्री — अलीगढ़
233–यशवंत, श्री — आजमगढ़
234–योगेन्द्र कुमार, श्री — बदायूं
235–योगेन्द्र सिंह, श्री — देवरिया
236–रंगनाथ मिश्र, श्री — भदोही
237–रंग बहादुर पटेल, श्री — इलाहाबाद
238–रघुनाथ सिंह चौहान, श्री — अल्मोड़ा
239–रघुराज प्रताप सिंह 'राजा भइया', कुंवर — प्रतापगढ़
240–रघुवर दयाल वर्मा, श्री — फिरोजाबाद
241–रणधीर सिंह, श्री — मुजफ्फरनगर
242–रतनजीत प्रताप नारायण सिंह, कुंवर — पडरौना
243–रमापति शास्त्री, श्री — गोण्डा
244–रमेश पोखरियाल "निशंक", डा० — गढ़वाल
245–रमेश राही, श्री — सीतापुर
246–रवीन्द्र पुण्डीर, प्रो० — मेरठ
247–चौधरी रवीन्द्र प्रताप, श्री — सिद्धार्थनगर
248–रवीन्द्र शुक्ला, श्री — झांसी
249–राकेश त्यागी, श्री — बुलन्दशहर
250–राकेश धर त्रिपाठी, श्री — इलाहाबाद
251–राकेश सोनकर, श्री — कानपुर नगर
252–राजधारी, श्री — बलिया
253–राजपाल त्यागी, श्री — गाजियाबाद

254–राजपाल सिंह, श्री — मुजफ्फरनगर
255–राज राय सिंह, श्रीमती — पीलीभीत
256–राजा गजफ्फर अली खां, श्री — बिजनौर
257–राजा राम, श्री — प्रतापगढ़
258–राजा राम पाल, श्री — कानपुर देहात
259–राजीव कुमार सिंह, श्री — बाराबंकी
260–राजेन्द्र, श्री — गाजीपुर
261–राजेन्द्र प्रताप सिंह उर्फ मोती सिंह, श्री — प्रतापगढ़
262–राजेन्द्र सिंह, श्री — देहरादून
263–राजेन्द्र सिंह पटेल, श्री — फतेहपुर
264–राजेश अग्रवाल, श्री — बरेली
265–राजेश कुमार सिंह, श्री — मुरादाबाद
266–राधेश्याम, श्री — कानपुर देहात
267–राधेश्याम गुप्त, श्री — फतेहपुर
268–राधेश्याम जायसवाल, श्री — सीतापुर
269–राधेश्याम सिंह, श्री — पडरौना
270–राम अचल राजभर, श्री — अम्बेडकर नगर
271–राम अवतार मिश्रा, श्री — शाहजहांपुर
272–राम आसरे पासवान, श्री — बस्ती
273–राम आसरे सिंह कुशवाहा, डा० — कानपुर नगर
274–राम औतार शाक्य, श्री — मैनपुरी
275–"पटेल" राम कुमार वर्मा, श्री — खीरी
276–राम कृपाल, श्री — इलाहाबाद
277–राम कृपाल सिंह, श्री — बांदा
278–राम खिलाड़ी, श्री — बदायूं
279–राम चन्द्र, श्री — मिर्जापुर
280–रामजग, श्री — आजमगढ़
281–रामतेज यादव, एडवोकेट — बहराइच
282–रामदेव आचार्य, श्री — बाराबंकी
283–राम नक्षत्र, श्री — पडरौना
284–राम नरेश रावत, श्री — गाजियाबाद
285–राम नरेश यादव, श्री — आजमगढ़
286–रामनाथ, श्री — प्रतापगढ़
287–रामपाल राजवंशी, श्री — सीतापुर
288–रामपाल वर्मा, श्री — हरदोई
289–रामपाल सिंह, श्री — गोण्डा
290–राम प्यारे, श्री — आजमगढ़
291–राम प्रताप सिंह, श्री — गोण्डा
292–राम प्रसाद चौधरी, श्री — बस्ती
293–राम बाबू हरित, श्री — आगरा
294–राम रतन यादव, श्री — सुल्तानपुर
295–राम लखन, श्री — सुल्तानपुर
296–राम ललित चौधरी, श्री — बस्ती
297–राम विशुन आजाद, श्री — गोण्डा
298–रामवीर उपाध्याय, श्री — अलीगढ़
299–रामवीर सिंह, श्री — फिरोजाबाद
300–राम शंकर पाल, श्री — उन्नाव
301–राम सखी, श्रीमती — अलीगढ़
302–राम सिंह, डा० — अलीगढ़
303–राम सिंह, श्री — बुलन्दशहर
304–राम सिंह सैनी, श्री — हरिद्वार
305–राम सेवक सिंह, श्री — इलाहाबाद
306–राम सेवक सिंह, श्री — बदायूं
307–राम स्वरूप शर्मा, श्री — मथुरा
308–राम स्वरूप सिंह, श्री — बिजनौर
309–राम हर्ष सिंह, श्री — सुल्तानपुर
310–रामाधार सिंह, श्री — हमीरपुर
311–रामेश्वर दयाल बाल्मीकि, श्री — मैनपुरी
312–रामेश्वर सिंह यादव, श्री — एटा
313–रिजवान जहीर उर्फ रिज्जू भइया, श्री — गोण्डा
314–रिफाकत हुसैन चौधरी, श्री — मुरादाबाद
315–रूप चौधरी, श्री — मेरठ
316–रेवती रमण सिंह उर्फ "मणी", कुंवर — इलाहाबाद
317–लक्ष्मी कान्त बाजपेयी, डा० — मेरठ

उत्तर प्रदेश विधान सभा

318-लक्ष्मी नारायण चौधरी, श्री — मथुरा
319-लल्लू सिंह, श्री — फैजाबाद
320-लाखी राम जोशी, श्री — टिहरी गढ़वाल
321-लालजी टण्डन, श्री — लखनऊ
322-लालजी वर्मा, श्री — अम्बेडकर नगर
323-लालमणि प्रसाद, श्री — बस्ती
324-लाल सिंह वर्मा, श्री — इटावा
325-लोकपति त्रिपाठी, श्री — मिर्जापुर
326-वकार अहमद शाह, डा० — बहराइच
327-वसीम अहमद, श्री — आजमगढ़
328-बहोरन लाल मौर्य, श्री — बरेली
329-विक्रमाजीत मौर्य, श्री — इलाहाबाद
330-विजमा यादव, श्रीमती — इलाहाबाद
331-विजय कुमार, श्री — गाजीपुर
332-विजय पाल सिंह, श्री — आगरा
333-विजय प्रकाश, श्री — इलाहाबाद
334-विजय सिंह, श्री — सोनभद्र
335-विद्या सागर गुप्ता, श्री — लखनऊ
336-विनय कुमार पाण्डेय "विन्नू", श्री — गोण्डा
337-विनोद कुमार सिंह उर्फ पंडित सिंह, श्री — गोण्डा
338-विनोद मणि, श्री — महराजगंज
339-विभूति प्रसाद निषाद, श्री — आजमगढ़
340-विरेन्द्र सिंह, श्री — मुजफ्फरनगर
341-विरेन्द्र सिंह, श्री — वाराणसी
342-विरेन्द्र सिंह सिरोही, श्री — बुलन्दशहर
343-विवेक कुमार सिंह, श्री — बांदा
344-विशन सिंह चुफाल, श्री — पिथौरागढ़
345-विशम्भर सिंह, श्री — मथुरा
346-विश्वनाथ, श्री — पडरौना
347-वीरेन्द्र प्रताप सिंह उर्फ मुन्ना, श्री — शाहजहांपुर
348-वीरेन्द्र सिंह सोलंकी, श्री — एटा
349-वेद प्रकाश, श्री — बस्ती
350-वेद प्रकाश सिंह एम०एस० डा०, श्री — बिजनौर
351-शब्बीर अहमद, श्री — बहराइच
352-शरदवीर सिंह, श्री — शाहजहांपुर
353-शिव गणेश लोधी, एडवोकेट — रायबरेली
354-शिव चरन प्रजापति, श्री — हमीरपुर
355-शिव पाल सिंह यादव, श्री — इटावा
356-शिव पूजन राम, श्री — वाराणसी
357-शिव प्रताप शुक्ल, श्री — गोरखपुर
358-शिव बहादुर सक्सेना, श्री — रामपुर
359-शिव शंकर, श्री — बांदा
360-शिव सिंह चक, श्री — फिरोजाबाद
361-शिवा कान्त, श्री — प्रतापगढ़
362-शिवेन्द्र सिंह उर्फ शिव बाबू, श्री — महराजगंज
363-शिशुपाल सिंह यादव, श्री — एटा
364-शेर बहादुर, श्री — अम्बेडकर नगर
365-श्याम किशोर यादव, श्री — लखनऊ
366-श्याम देव राय चौधरी, (दादा), श्री — वाराणसी
367-श्याम प्रकाश, श्री — हरदोई
368-श्याम लाल रावत, श्री — सीतापुर
369-श्याम सुन्दर, श्री — रायबरेली
370-श्याम सुन्दर शर्मा, श्री — मथुरा
371-श्रीनिवास मणि, श्री — देवरिया
372-श्रीराम, श्री — जालौन
373-श्रीराम, श्री — मऊ
374-श्रीराम यादव, श्री — जौनपुर
375-संग्राम सिंह, श्री — बाराबंकी
376-संजय गर्ग, श्री — सहारनपुर
377-संजय सिंह, श्री — मुजफ्फरनगर
378-संदीप अग्रवाल, श्री — मुरादाबाद
379-सतीश जतारिया, श्री — झांसी

380–सतीश महाना, श्री — कानपुर नगर
381–सतीश शर्मा, श्री — बुलन्दशहर
382–सत्य प्रकाश विकल, श्री — आगरा
383–सत्य प्रकाश सोनकर, श्री — वाराणसी
384–सन्त, श्री — गोरखपुर
385–सन्त राम सिंह, श्री — जालौन
386–समर पाल सिंह, श्री — मेरठ
387–सरजीत सिंह डंग, डा० — मिर्जापुर
388–सरदार सिंह, श्री — मथुरा
389–सरवर अली खां, श्री — बाराबंकी
390–सरस्वती प्रताप सिंह, श्री — खीरी
391–सर्वेश कुमार उर्फ राकेश कुमार, कुंवर — मुरादाबाद
392–सीता राम निषाद, श्री — फैजाबाद
393–सीमा द्विवेदी, श्रीमती — जौनपुर
394–सुखदेवी वर्मा, श्रीमती — इटावा
395–सुखपाल पाण्डेय, श्री — बस्ती
396–सुखवीर सिंह पुण्डीर, श्री — सहारनपुर
397–सुधाकर सिंह, श्री — मऊ
398–सुभाष चन्द्र श्रीवास्तव, श्री — देवरिया
399–सुमन लता सिंह, श्रीमती — बरेली
400–सुरेन्द्र नाथ, श्री — बाराबंकी
401–सुरेन्द्र प्रताप सिंह, श्री — बरेली
402–सुरेश कुमार खन्ना, श्री — शाहजहांपुर
403–सुरेश कुमार श्रीवास्तव, श्री — लखनऊ
404–सुरेश चन्द्र आर्य, श्री — उधम सिंह नगर
405–सुरेश चन्द्र तिवारी, श्री — लखनऊ
406–सुशील शाक्य, श्री — फर्रुखाबाद
407–सुशीला अग्रवाल, श्रीमती — मुजफ्फरनगर
408–सूर्य प्रताप शाही, श्री — देवरिया
409–सूर्य भान, श्री — सुल्तानपुर
410–सौलत अली, श्री — मुरादाबाद
411–स्वामी प्रसाद मौर्य, श्री — रायबरेली
412–हरदेव सिंह, श्री — बाराबंकी
413–हरपाल सिंह, श्री — बुलन्दशहर
414–हरवंश कपूर, श्री — देहरादून
415–हरिनारायण, श्री — बलिया
416–हरि प्रसाद उर्फ घमड़ी, श्री — सोनभद्र
417–हरि शंकर तिवारी, श्री — गोरखपुर
418–हरि शंकर माहौर, श्री — अलीगढ़
419–हरी किशन, श्री — कानपुर देहात
420–हरीश चन्द्र गंगवार, श्री — बरेली
421–हरीश चन्द्र "हरीश जी", श्री — वाराणसी
422–हीरा लाल गौतम, श्री — आजमगढ़
423–हुकुम सिंह, श्री — मुजफ्फरनगर
424–होराम सिंह, श्री — बुलन्दशहर

उत्तर प्रदेश विधान सभा

उत्तर प्रदेश विधान सभा

राज्यपाल
श्री रोमेश भण्डारी
मंत्रि-परिषद्

1–सुश्री मायावती (मुख्य मंत्री)	सामान्य प्रशासन, गृह, गोपन, नियुक्ति, कार्मिक, ऊर्जा, सूचना, निर्वाचन, वित्त, न्याय, विधायी, औद्योगिक विकास, आबकारी, नियोजन, चिकित्सा शिक्षा, वन, प्रोटोकाल, नागरिक उड्डयन, लघु सिंचाई, अम्बेडकर ग्राम विकास, राज्य सम्पत्ति, लघु उद्योग, निर्यात प्रोत्साहन, उद्यान ।
2–श्री कलराज मिश्र	लोक निर्माण, पर्यटन
3–श्री आर० के० चौधरी	सहकारिता
4–श्री लालजी टण्डन	आवास, नगर विकास
5–श्री बी० आर० वर्मा	संसदीय कार्य, पर्यावरण
6–श्री ओम प्रकाश सिंह	सिंचाई, गन्ना विकास
7–श्री सुखदेव राजभर	ग्राम्य विकास
8–श्री हरी किशन	महिला कल्याण, बाल विकास एवं पुष्टाहार
9–श्री नरेन्द्र कुमार सिंह गौर	उच्च शिक्षा, प्राविधिक शिक्षा
10–श्री श्रीराम पाल	समाज कल्याण, अनुसूचित जाति/जनजाति कल्याण
11–श्री रमापति शास्त्री	स्वास्थ्य एवं चिकित्सा
12–श्री काजी मुहम्मद मुहीउद्दीन	कारागार, राजनैतिक पेंशन
13–डा० नैपाल सिंह	माध्यमिक शिक्षा, भाषा
14–श्री मारकण्डेय चन्द	संस्कृति, खेलकूद
15–श्रीमती प्रभा द्विवेदी	श्रम
16–श्री नसीमुद्दीन सिद्दीकी	कृषि
17–श्री ऐजाज रिज़वी	खाद्य एवं रसद
18–श्री राधेश्याम गुप्ता	संस्थागत वित्त
19–श्री रामवीर उपाध्याय	परिवहन
20–श्री वीरेन्द्र सिंह सिरोही	राजस्व
21–श्री स्वामी प्रसाद मौर्य	खादी एवं ग्रामीण उद्योग

उत्तर प्रदेश विधान सभा

राज्य मंत्री स्वतंत्र प्रभार

1–श्री बाबूलाल कुशवाहा	हथकरघा, रेशम उद्योग
2–श्री बालेश्वर त्यागी	पंचायती राज
3–श्री सुन्दर सिंह बघेल	दुग्ध विकास, पशुधन
4–श्री भोला शंकर मौर्य	विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी
5–श्री रवीन्द्र शुक्ल	बेसिक शिक्षा
6–श्री भगवती प्रसाद सागर	वैकल्पिक ऊर्जा
7–श्री बुनियाद हुसैन अंसारी	अल्पसंख्यक कल्याण, मुस्लिम वक्फ
8–श्री राम प्रसाद चौधरी	क्षेत्रीय विकास
9–श्री विभूति प्रसाद निषाद	इलेक्ट्रानिक्स
10–श्री शिव चरण प्रजापति	पिछड़ा वर्ग कल्याण
11–श्री राम अचल राजभर	कृषि शिक्षा
12–श्री लाल मणि प्रसाद	होमगार्ड्स
13–श्री गंगा प्रसाद पुष्कर	ग्रामीण अभियंत्रण सेवा
14–श्री मातवर सिंह कण्डारी	उत्तराखण्ड विकास
15–श्री राधेश्याम कोरी	राष्ट्रीय एकीकरण, कार्यक्रम क्रियान्वयन

राज्य मंत्री

1–श्री राम शंकर पाल	सहकारिता मंत्री
2–श्री गोरख प्रसाद निषाद	श्रम मंत्री
3–श्री महेन्द्र नाथ पाण्डे	आवास एवं नगर विकास मंत्री
4–श्री धर्मपाल सिंह	लोक निर्माण एवं पर्यटन मंत्री
5–श्री जयपाल सिंह	सिंचाई एवं गन्ना विकास मंत्री
6–श्री देवेन्द्र सिंह उर्फ भोले सिंह	स्वास्थ्य एवं चिकित्सा मंत्री
7–श्री अशोक यादव	राजस्व मंत्री
8–श्रीमती राज राय सिंह	संस्थागत वित्त मंत्री
9–श्री बंशीधर भगत	खाद्य एवं रसद मंत्री

उत्तर प्रदेश विधान सभा

नेता विरोधी दल

रिक्त .....

उत्तर प्रदेश विधान सभा के पदाधिकारी तथा अधिष्ठाता मण्डल

अध्यक्ष

श्री केशरी नाथ त्रिपाठी

उपाध्यक्ष

रिक्त .....

सचिव

श्री प्रेम चन्द्र सक्सेना

उत्तर प्रदेश विधान सभा

अधिष्ठाता मण्डल

1–डा० सरजीत सिंह डंग, सदस्य, विधान सभा (मिर्जापुर)
2–श्री सूर्य प्रताप शाही, सदस्य, विधान सभा (देवरिया)
3–श्री राकेश धर त्रिपाठी, सदस्य, विधान सभा (इलाहाबाद)
4–श्री रंगनाथ मिश्र, सदस्य, विधान सभा (वाराणसी)
5–श्री लालजी वर्मा सदस्य, विधान सभा (अम्बेडकर नगर)
6–श्री दिवाकर विक्रम सिंह, सदस्य, विधान सभा (सिद्धार्थ नगर)
7–डा० अशोक बाजपेई, सदस्य, विधान सभा (हरदोई)
8–श्री मुन्ना चौहान, सदस्य, विधान सभा (देहरादून)
9–श्री गौरी शंकर एडवोकेट, सदस्य, विधान सभा (लखनऊ)
10–श्री शिवेन्द्र सिंह ऊर्फ शिव बाबू, सदस्य, विधान सभा (महराजगंज)

उत्तर प्रदेश विधान सभा

उत्तर प्रदेश विधान सभा

(गुरुवार, दिनांक 27 मार्च, 97)

निम्नांकित सदस्यों के अतिरिक्त अन्य सभी सदस्य उपस्थित थे :–

अजय कुमार पोइया, श्री	मथुरा
अजय प्रताप सिंह उर्फ लल्ला भइया, श्री	गोण्डा
अजय भट्ट, श्री	अल्मोड़ा
अजय राय, श्री	वाराणसी
अजित कुमार मेहरोत्रा, श्री	सीतापुर
अतीक अहमद, श्री	इलाहाबाद
अनिल कुमार, श्री	बलिया
अनीस खां, श्री	पीलीभीत
अफजाल अंसारी, श्री	गाजीपुर
अफजाल अहमद, श्री	जौनपुर
अब्दुल कलाम, श्री	बस्ती
अब्दुल कलाम, श्री	वाराणसी
अब्दुल खालिक, श्री	अलीगढ़
अब्दुल मन्नान, श्री	हरदोई
अमर मणि, श्री	महराजगंज
अमित अग्रवाल, श्री	मेरठ
अमीर आलम खान, श्री	मुजफ्फरनगर
अम्बरीष कुमार, श्री	हरिद्वार
अम्बिका चौधरी, श्री	बलिया
अम्मार रिजवी, डा०	सीतापुर
अयोध्या प्रसाद पाल, श्री	फतेहपुर
अरविन्द कुमार जैन, श्री	ललितपुर
अरविन्द गिरि, श्री	खीरी
अरुणवीर सिंह, श्री	बहराइच
अशफाक अहमद, श्री	बरेली
अशोक कुमार, श्री	जौनपुर
अशोक कुमार सिंह, श्री	रायबरेली
अशोक बाजपेई, डा०	हरदोई
आनन्द प्रकाश, श्री	पडरौना
आलमबदी, श्री	आजमगढ़
इकबाल महमूद, श्री	मुरादाबाद
उदय राज यादव, श्री	उन्नाव
उमाकान्त यादव, श्री	जौनपुर
उवैदुर्रहमान, श्री	गोण्डा
ओंकार, श्री	एटा
ओमकार सिंह, श्री	बदायूं
ओम प्रकाश, श्री	एटा
ओम प्रकाश, श्री	गाजीपुर
ओम प्रकाश गुप्त, श्री	सीतापुर
ओमवती देवी, श्रीमती	बिजनौर
कमला प्रसाद रावत, श्री	बाराबंकी
कवर पाल सिंह मास्टर, श्री	सहारनपुर
काजिम अली खां, उर्फ नवेद मियां, श्री	रामपुर
काशिम हसन, श्री	फतेहपुर
काशीनाथ, श्री	सुल्तानपुर
किशन लाल बघेल, सेठ	आगरा
कृष्ण चन्द्र पुनेठा, श्री	पिथौरागढ़
कृष्णा राज, श्रीमती	खीरी
केदार सिंह फोनिया, श्री	चमोली
केशो मेहरा, श्री	आगरा
के० सी० सिंह, "बाबा"	उधम सिंह नगर
कैलाश, श्री	गाजीपुर
कौशल किशोर, श्री	खीरी
गंगा सिंह चौहान, श्री	हरदोई
गजेन्द्र कुमार मुन्ना, श्री	मेरठ
गणेश, श्री	गाजीपुर
गुलाब देवी, श्रीमती	मुरादाबाद
गोमती यादव, श्री	लखनऊ

उत्तर प्रदेश विधान सभा

गौरी देवी, श्रीमती	गोरखपुर
चन्द्र किशोर, श्री	महराजगंज
चन्द्र नाथ सिंह, श्री	प्रतापगढ़
चन्द्र पाल सिंह यादव, श्री	झांसी
चन्द्रेश पासवान, श्री	गोरखपुर
चेतराम, श्री	शाहजहांपुर
छब्बू पटेल, श्री	वाराणसी
छोटे लाल राजभर, श्री	महोबा
छोटे लाल गंगवार, मास्टर	बरेली
छोटे सिंह यादव, श्री	फर्रुखाबाद
जगत पाल सिंह, मेजर	मुरादाबाद
जगदीश सिंह राणा, श्री	सहारनपुर
जमालुद्दीन सिद्दीकी, श्री	फर्रुखाबाद
जय प्रकाश, श्री	गाजियाबाद
जय प्रताप सिंह, श्री	सिद्धार्थनगर
जितेन्द्र कुमार जायसवाल उर्फ पप्पू भइया	गोरखपुर
ज्ञानवती, श्रीमती	अलीगढ़
ज्ञानेन्द्र सिंह, श्री	महराजगंज
तारकेश्वर प्रसाद शुक्ल, श्री	गोरखपुर
ददू प्रसाद, श्री	बांदा
दयाशंकर, श्री	जालौन
दलवीर सिंह, श्री	अलीगढ़
दिलीप कुमार, श्री	बहराइच
दीपक कुमार, श्री	उन्नाव
दीप लाल भारतीय, श्री	पडरौना
दुर्गा प्रसाद, श्री	आजमगढ़
देवेन्द्र सिंह यादव, कुंवर	एटा
धनराज यादव, श्री	सिद्धार्थनगर
धनीराम वर्मा, श्री	इटावा
धर्मज्ञ मिश्र, श्री	हरदोई
नरेन्द्र, श्री	आजमगढ़
नरेन्द्र सिंह चौधरी, श्री	कानपुर देहात
नरेन्द्र सिंह यादव, श्री	फर्रुखाबाद
नवाब सिंह नागर, श्री	गाजियाबाद
नेतराम सिंह, श्री	एटा
परमानन्द दण्डी, स्वामी	रामपुर
परवेज हलीम खां, श्री	मेरठ
पारसनाथ यादव, श्री	जौनपुर
पीतम राम, श्री	पीलीभीत
प्रभु नारायन, श्री	वाराणसी
प्रेम लता कटियार, श्रीमती	कानपुर नगर
फतेह बहादुर, श्री	महराजगंज
फागू, श्री	मऊ
बंश नारायण सिंह, श्री	भदोही
बच्चा पाठक, श्री	बलिया
बनारसी दास चान्दना, श्री	मेरठ
बांके लाल सोनकर, श्री	जौनपुर
बादशाह सिंह, श्री	हमीरपुर
बाबू खां, श्री	हरदोई
बाबू लाल, श्री	आगरा
बिजेन्द्र आर्य, श्री	मुजफ्फरनगर
बिहारी लाल आर्य, श्री	झांसी
ब्रजेन्द्र पाल सिंह, श्री	मुरादाबाद
भगवान सिंह शाक्य, श्री	बदायूं
भरत सिंह, श्री	बलिया
भाई लाल, श्री	मिर्जापुर
भारत सिंह रावत, श्री	गढ़वाल
भीम प्रसाद, श्री	अम्बेडकर नगर
भोनू, श्री	गाजीपुर
मंगल सिंह, श्री	मुरादाबाद
मंजू, श्रीमती	बलिया
मतेश चन्द्र सोनकर, श्री	इलाहाबाद
मथुरा प्रसाद, श्री	कानपुर देहात
मलखान सिंह, श्री	अलीगढ़
महेन्द्र कुमार, श्री	बुलन्दशहर

नोट :– श्री आलमबदी व श्री वसीम अहमद ने शपथ नहीं लिया है ।

उत्तर प्रदेश विधान सभा

महेन्द्र कुमार, श्री	सीतापुर
महेन्द्र पाल निषाद, श्री	बांदा
महेन्द्र सिंह यादव, श्री	बुलन्दशहर
मानिक चन्द यादव, श्री	मैनपुरी
मारकण्डेय चन्द, श्री	गोरखपुर
मित्रसेन यादव, श्री	फैजाबाद
मुख्तार अन्सारी, श्री	मऊ
मुन्ना चौहान, श्री	देहरादून
मुराद लारी, श्री	देवरिया
मुस्ताक सोलंकी, श्री	कानपुर नगर
मुस्लिम, डा०	रायबरेली
मुहर सिंह अम्बाडी, श्री	इटावा
यशपाल सिंह चौहान, श्री	अलीगढ़
योगेन्द्र सिंह, श्री	देवरिया
रघुनाथ सिंह चौहान, श्री	अल्मोड़ा
रमेश पोखरियाल "निशंक", डा०	गढ़वाल
रमेश राही, श्री	सीतापुर
चौधरी रवीन्द्र प्रताप	सिद्धार्थनगर
राकेश त्यागी, श्री	बुलन्दशहर
राजपाल त्यागी, श्री	गाजियाबाद
राजा गजफ्फर अली खां, श्री	बिजनौर
राजेन्द्र, श्री	गाजीपुर
राजेन्द्र सिंह पटेल, श्री	फतेहपुर
राजेश कुमार सिंह, श्री	मुरादाबाद
राधेश्याम जायसवाल, श्री	सीतापुर
राधेश्याम सिंह, श्री	पडरौना
राम आसरे सिंह कुशवाहा, डा०	कानपुर नगर
राम कृपाल सिंह, श्री	बांदा
राम खिलाड़ी, श्री	बदायूं
राम चन्द्र, श्री	मिर्जापुर
रामतेज यादव, एडवोकेट	बहराइच
राम नक्षत्र, श्री	पडरौना
राम नरेश रावत, श्री	गाजियाबाद
राम नरेश यादव, श्री	आजमगढ़
रामपाल वर्मा, श्री	हरदोई
राम प्यारे, श्री	आजमगढ़
राम ललित चौधरी, श्री	बस्ती
रामवीर सिंह, श्री	फिरोजाबाद
राम सिंह, डा०	अलीगढ़
राम सिंह, श्री	बुलन्दशहर
राम सिंह सैनी, श्री	हरिद्वार
राम स्वरूप शर्मा, श्री	मथुरा
राम स्वरूप सिंह, श्री	बिजनौर
राम हर्ष सिंह, श्री	सुल्तानपुर
रामेश्वर दयाल बाल्मीकि, श्री	मैनपुरी
रामेश्वर सिंह यादव, श्री	एटा
रिजवान जहीर उर्फ रिज्जू भइया, श्री	गोण्डा
रिफाकत हुसैन चौधरी, श्री	मुरादाबाद
लक्ष्मी नारायण चौधरी, श्री	मथुरा
लल्लू सिंह, श्री	फैजाबाद
लाल सिंह वर्मा, श्री	इटावा
लोकपति त्रिपाठी, श्री	मिर्जापुर
वकार अहमद शाह, डा०	बहराइच
वसीम अहमद, श्री	आजमगढ़
विजमा यादव, श्रीमती	इलाहाबाद
विजय पाल सिंह, श्री	आगरा
विजय सिंह, श्री	सोनभद्र
विद्या सागर गुप्ता, श्री	लखनऊ
विनय कुमार पाण्डेय "विन्नू", श्री	गोण्डा
विनोद कुमार सिंह उर्फ पंडित सिंह, श्री	गोण्डा
विनोद मणि, श्री	महराजगंज
विरेन्द्र सिंह, श्री	मुजफ्फरनगर
विशन सिंह चुफाल, श्री	पिथौरागढ़
विश्वनाथ, श्री	पडरौना
वीरेन्द्र प्रताप सिंह उर्फ मुन्ना, श्री	शाहजहांपुर
शब्बीर अहमद, श्री	बहराइच

उत्तर प्रदेश विधान सभा

शरदवीर सिंह, श्री	शाहजहांपुर
शिव गणेश लोधी, एडवोकेट	रायबरेली
शिव पाल सिंह यादव, श्री	इटावा
शिव बहादुर सक्सेना, श्री	रामपुर
शिव सिंह चक, श्री	फिरोजाबाद
श्याम किशोर यादव, श्री	लखनऊ
श्याम सुन्दर शर्मा, श्री	मथुरा
श्रीनिवास मणि, श्री	देवरिया
श्रीराम, श्री	मऊ
श्रीराम यादव, श्री	जौनपुर
संजय गर्ग, श्री	सहारनपुर
संजय सिंह, श्री	मुजफ्फरनगर
सतीश जतारिया, श्री	झांसी
सत्य प्रकाश सोनकर, श्री	वाराणसी
सन्त, श्री	गोरखपुर
सन्त राम सिंह, श्री	जालौन
सरदार सिंह, श्री	मथुरा
सरवर अली खां,श्री	बाराबंकी
सरस्वती प्रताप सिंह, श्री	खीरी
सर्वेश कुमार उर्फ राकेश कुमार, कुंवर	मुरादाबाद
सुखदेवी वर्मा, श्रीमती	इटावा
सुखपाल पाण्डेय, श्री	बस्ती
सुखवीर सिंह पुण्डीर, श्री	सहारनपुर
सुधाकर सिंह, श्री	मऊ
सुरेन्द्र प्रताप सिंह, श्री	बरेली
सुरेश कुमार खन्ना, श्री	शाहजहांपुर
सुरेश कुमार श्रीवास्तव, श्री	लखनऊ
सुरेश चन्द्र आर्य, श्री	उधम सिंह नगर
सुरेश चन्द्र तिवारी, श्री	लखनऊ
सूर्य प्रताप शाही, श्री	देवरिया
हरदेव सिंह, श्री	बाराबंकी
हरपाल सिंह, श्री	बुलन्दशहर
हरि प्रसाद उर्फ घमड़ी, श्री	सोनभद्र
हरि शंकर तिवारी, श्री	गोरखपुर
हरि शंकर माहौर, श्री	अलीगढ़
होराम सिंह, श्री	बुलन्दशहर

उत्तर प्रदेश विधान सभा

गुरुवार, दिनांक 27 मार्च, 1997

(विधान सभा की बैठक सभा मण्डप, लखनऊ में अपराह्न 3 बजे अध्यक्ष (प्रोटेम) श्री कल्याण सिंह की अध्यक्षता में आरम्भ हुई ।)

अध्यक्ष पद के कर्तव्यों का पालन करने के लिए श्री राज्यपाल द्वारा श्री कल्याण सिंह ,सदस्य, विधान सभा की नियुक्ति की सूचना

सचिव, विधान सभा–

श्रीमन्, मैं आपकी अनुमति से महामहिम श्री राज्यपाल के दि० 22 मार्च, 1997 के आदेश को पढ़ता हूं ।

"भारत का संविधान" के अनुच्छेद 180 के खण्ड (1) द्वारा प्रदत्त अधिकारों का प्रयोग करके मैं रोमेश भण्डारी, राज्यपाल, उत्तर प्रदेश, श्री कल्याण सिंह को, जो निर्वाचन क्षेत्र अतरौली, जिला अलीगढ़ से विधान सभा के सदस्य हैं, उस समय तक के लिए जब तक कि संविधान के अनुच्छेद 178 के उपबन्धों के अनुसार विधान सभा द्वारा अध्यक्ष का निर्वाचन न कर लिया जाए, संविधान के अनुच्छेद 179 के द्वितीय परन्तुक के अधीन रहते हुए, अध्यक्ष का पद रिक्त होने पर अध्यक्ष पद के कर्तव्यों का पालन करने के लिए नियुक्त करता हूं ।

विधान सभा अध्यक्ष का निर्वाचन तथा नव निर्वाचित अध्यक्ष, श्री केशरी नाथ त्रिपाठी को बधाई

श्री अध्यक्ष (प्रोटेम)–

माननीय सदस्यगण, जैसा कि आपको विदित ही है कि आज का दिन अध्यक्ष पद के निर्वाचन के लिए नियत किया गया है । उक्त निर्वाचन के संबंध में अध्यक्ष पद के लिए नाम-निर्देशित अभ्यर्थियों के नामांकन पत्रों का विवरण इस प्रकार है :–

1–श्री केशरी नाथ त्रिपाठी, प्रस्तावक सुश्री मायावती व समर्थक श्री प्रदीप कुमार

2–श्री केशरी नाथ त्रिपाठी, प्रस्तावक श्री आर० के० चौधरी व समर्थक श्री रघुबर दयाल वर्मा

3–श्री केशरी नाथ त्रिपाठी, प्रस्तावक श्री प्रमोद कुमार तथा समर्थक श्री दिवाकर विक्रम सिंह

4–श्री स्वामी ओइम्वेश, प्रस्तावक श्री मूलचन्द तथा समर्थक श्रीमती ओमवती ।

उत्तर प्रदेश विधान सभा की प्रक्रिया तथा कार्य-संचालन नियमावली के नियम 8 के उप नियम (3) के खण्ड (क) में यह उपबन्धित है कि निर्वाचन के पूर्व किसी भी समय कोई अभ्यर्थी जो नाम-निर्देशित हुए हों, पीठासीन अधिकारी को इस विषय में मौखिक या लिखित रूप से सूचना देकर अपना नाम निर्वाचन से वापस ले सकते हैं । मैं नाम वापस लेने के लिए 5 मिनट का समय दे रहा हूं । जो भी अभ्यर्थी चाहे तो वह अपना नाम वापस ले सकते हैं।

श्री प्रमोद कुमार–

प्रोटेम स्पीकर महोदय, इस सदन की यह गौरवशाली परम्परा रही है । जिस आसन पर आप विराजमान हैं इस पर जो भी व्यक्ति आसीन होते हैं उनको सभी दलों का विश्वास प्राप्त होता है । यह

परम्परा भी रही है कि हम उस पद पर सर्वसम्मति से निर्वाचन करते रहे हैं। मैं उसी सर्वोच्च परम्परा का निर्वाह करते हुए आग्रह करूंगा। चूंकि यह अधिकार नेता सदन का होता है, सत्तारूढ़ दल का होता है कि वह किसे उस पद के लिए प्रस्तुत करे बाकी दल उसका समर्थन करते हैं। मैं आग्रह करता हूं कि अगर कोई संवादहीनता रह गई हो, कोई कठिनाई रह गई हो, उसको दूर कर लिया जाय। मैं साथी श्री ओइमूवेश से निवेदन करूंगा कि वह अपना नाम वापस लेकर उसी परम्परा कर निर्वाह करें। सुश्री मायावती जी से, श्री लाल जी टण्डन जी से आग्रह करूंगा कि वह संवाद हीनता को समाप्त कराएं व सदन की गौरव शाली परम्परा का निर्वाह हो जिससे श्री केशरी नाथ त्रिपाठी जी का निर्वाचन सर्वसम्मति से हो सके।

* कुंवर रेवती रमण सिंह–

माननीय प्रोटेम स्पीकर महोदय, श्री प्रमोद कुमार जी ने जो कुछ कहा वह अपनी जगह है लेकिन सबसे बड़ा विपक्षी दल होने के नाते जब नामांकन पत्र भरे जा रहे थे तो उस समय हमको भी आमंत्रित किया जाता लेकिन मुझे बड़ा पश्चाताप हुआ कि एक नई परम्परा डाली गई जो इसके पूर्व कभी नहीं हुई। सबसे बड़ा विपक्षी दल होने के नाते हमको कक्ष में बुलाया ही नहीं गया। वरना इस सदन की मर्यादा को हम भी जानते हैं, इसकी गरिमा को भी जानते हैं। उसी गरिमा के अनुकूल हम ऐसा होने ही नहीं देते। लेकिन मुझे खेद है कि सत्तारूढ़ दल की ओर से ऐसा कोई प्रयास ही नहीं किया गया। अगर कदाचित् ऐसा प्रयास किया गया होता तो कल ही निर्विरोध अध्यक्ष का चुनाव हो गया होता।

मैं उम्मीद करता हूं कि भविष्य में इस सदन की गरिमा को कायम रखा जायेगा। इसकी गरिमा के अनुरूप ही कार्य किया जायेगा। मैं स्वामी जी से आग्रह करूंगा कि वह अपने नाम को वापस लेने की कृपा करें जिससे सदन में गरिमापूर्ण ढंग से अध्यक्ष का चुनाव हो सके।

(समय 3 बजकर 5 मिनट)

श्री गौरी शंकर (एडवोकेट)–

मा० प्रोटेम स्पीकर महोदय, जैसा कि हमारे दोनों नेताओं ने इस बात पर बल दिया है अध्यक्ष का चुनाव परम्पराओं के अनुसार सर्वसम्मति से किया जाये। श्रीमन्, आपको भी स्मरण होगा और मुझे भी 20-25 सालों से आप सबके सहयोग और शुभकामनाओं से इस हाऊस में आने का अवसर मिला है और छठीं बार आया हूं। हमेशा ही यह परिपाटी रही है कि अध्यक्ष के इस गरिमामय पद पर सर्वसम्मति से निर्वाचन होता है और जो अध्यक्ष बनता है, वह पूरे हाऊस के मा० सदस्यों के अधिकारों की रक्षा करता है, यदि सत्ता पक्ष किसी प्रकार निरंकुश हो जाये तो उस पर अंकुश लगाने का कार्य अध्यक्ष का होता है। यह खेद की बात है कि कल जिस तरह से इस नई परिपाटी का जन्म हुआ। मुख्य विपक्षी दल को कान्फीडेन्स में न लेकर नामांकन कराया गया। बात कर लेने से कोई टकराहट नहीं होती। व्यक्तियों से बड़ी होती हैं परम्परायें और व्यक्तियों से बड़ा होता है मा० सदन। मैं कोई आक्षेप नहीं करना चाहता और न आशय ही है। जैसा कि हमारे दोनों नेताओं, कुंवर रेवती रमण सिंह जी व प्रमोद कुमार जी ने

नोट :–* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

कहा है कि सर्वसम्मति से अध्यक्ष के चुनाव की परिपाटी रही है । इसलिए मैं स्वामी जी से अनुरोध करूंगा कि इस बात को मस्तिष्क से निकाल दें कि इन्होंने परम्पराओं को तोड़ा है तो उन्हें भी परम्परायें तोड़नी हैं ।

श्रीमन्, आपने यक्ष प्रश्न पढ़े हैं, जिनमें यक्ष का प्रश्न युधिष्ठिर से होता है कि आकाश से ऊंचा क्या है और पृथ्वी से भारी क्या है ? इस पर युधिष्ठिर ने कहा था कि आकाश से ऊंचा पिता है और धरती से भारी माता है । आगे पुनः जब यक्ष ने पूछा कि कः पन्थः, अर्थात् पन्थ क्या है तो धर्मराज ने उत्तर दिया था कि "महाजनों येन गतो सः पन्थः" बड़े लोग जिस मार्ग पर जायें वही मार्ग कहलता है । अर्थात् बड़ों के रास्ते का अनुगमन करना चाहिए । उसी क्रम में मैं अपने साथी स्वामी जी से अनुरोध करूंगा, कि पुरानी परम्पराओं के अनुरूप अध्यक्ष के चुनाव हेतु सर्वसम्मति का वातावरण बनाने का मार्ग प्रशस्त करें और अपना नाम इस हेतु वापस लेने की कृपा करें ।

श्री अध्यक्ष (प्रोटेम)–

मैं एक व्यवस्था दे रहा हूं कि पूर्व में दिए गए पांच मिनट के समय को उतने समय के लिए बढ़ा रहा हूं तब तक कि आप अपने विचार न रख लें ।

* स्वामी ओइम्वेश–

माननीय सभाध्यक्ष जी, मैं, अध्यक्ष के चुनाव मैदान के हटने से पहले इस बात को जरूर कहना चाहूंगा कि सत्तारूढ़ पार्टी ने स्वस्थ परम्परा का निर्वाह नहीं किया है लेकिन फिर भी कल माननीय मुलायम सिंह यादव जी ने मुझे निर्देश दिया था कि हम सदन की गरिमा को कायम रखेंगे । किसी भी कीमत पर उस गरिमा को गिरने नहीं देंगे। अतः जाकर कल नाम वापस ले लेना । इसलिए मैं सदन की गरिमा का ध्यान रखते हुए उच्च परम्पराओं को मद्देनगर रखते हुए अध्यक्ष पद के निर्वाचन से अपना नाम-निर्देशन वापस लेता हूं ।

(सत्तापक्ष एवं विपक्ष के सभी सदस्यों ने मेजें थपथपायीं)

इसके साथ ही मैं श्री केशरी नाथ त्रिपाठी जी के सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुने जाने का मार्ग प्रशस्त करता हूं ।

श्री रघुवर दयाल वर्मा–

मान्यवर, स्वेच्छा से नाम वापस लेता हूं, यह जोड़ दिया जाय ।

श्री अध्यक्ष (प्रोटेम)–

निर्वाचन से सम्बन्धित अभ्यर्थियों में से क्रम संख्या–4 पर उल्लिखित श्री ओइम्वेश, सदस्य, विधान सभा ने उक्त निर्वाचन से आज अपना नाम वापस ले लिया है अतः अब उक्त नाम निर्देशन-पत्रों में एक ही नाम का प्रस्ताव है । उत्तर प्रदेश विधान सभा की प्रक्रिया तथा कार्य-संचालन नियमावली के नियम 8 के उपनियम (3) (क) के अनुसार इस निर्वाचन के लिये औपचारिक प्रस्ताव करना आवश्यक नहीं

नोट :–* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

है और मैं माननीय श्री केशरी नाथ त्रिपाठी को अध्यक्ष पद के लिये सर्वसम्मति से निर्वाचित किये जाने की घोषणा करता हूं।

(मेजों की थपथपाहट)

मैं माननीय श्री केशरी नाथ त्रिपाठी को सर्वसम्मति से निर्वाचित होने पर बधाई देता हूं। ख्यातिलब्ध उच्चकोटि के राजनीतिज्ञ एवं इलाहाबाद उच्च न्यायालय के एक वरिष्ठ तथा अग्रणी अधिवक्ता माननीय श्री केशरी नाथ त्रिपाठी, अध्यक्ष, विधान सभा के गौरवान्वित पद पर द्वितीय बार सर्वसम्मति से निर्वाचित होकर 15वें अध्यक्ष के रूप में प्रतिष्ठित हुऐ हैं। डा० श्यामा प्रसाद मुखर्जी के आदर्शों के अनुगामी, पं० दीनदयाल उपाध्याय तथा श्री अटल बिहारी बाजपेयी से प्रेरित तथा राजर्षि टण्डन जी के हिन्दी प्रेम एवं राजनैतिक नैतिकता के अनुपालक, श्री केशरी नाथ त्रिपाठी का जन्म 10 नवम्बर, 1934 को इलाहाबाद के एक संभ्रान्त परिवार में हुआ। आपका विवाह 1958 में सुश्री सुधा त्रिपाठी से हुआ। आपकी सहधर्मिणी श्रीमती सुधा त्रिपाठी वाराणसी के प्रसिद्ध स्वतंत्रता संग्राम सेनानी पं० सत्य नारायण मिश्र की पुत्री हैं। आपके एक पुत्र और दो पुत्रियां हैं। आपकी माता श्रीमती शिवा देवी एक साध्वी महिला थीं और पिता पं० हरिश्चन्द्र त्रिपाठी इलाहाबाद उच्च न्यायालय में कार्यरत थे और अपनी ईमानदारी तथा कर्तव्यनिष्ठा के लिये प्रसिद्ध थे। माता एवं पिता पं० हरिश्चन्द्र त्रिपाठी द्वारा प्रदत्त नैतिक मूल्यों की शिक्षा, भारतीय संस्कृति के प्रति अटूट श्रद्धा तथा कर्मक्षेत्र में पिता की प्रेरणा ने आपके व्यक्तित्व को संवारा और एक कुशल राजनीतिज्ञ एवं सफल अधिवक्ता के रूप में आपको स्थापित किया।

आपने प्रारम्भिक शिक्षा सरयूपारीण विद्यालय, इलाहाबाद तथा कक्षा 9 से 12 तक की शिक्षा अग्रवाल विद्यालय, इलाहाबाद से प्राप्त की। 1953 में आपने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से स्नातक की उपाधि तथा 1955 में एल० एल० बी० की परीक्षा उत्तीर्ण की। एक वर्षीय वकालत का प्रशिक्षण इलाहाबाद के ख्याति प्राप्त अधिवक्ता, श्री जगदीश स्वरूप (जो बाद में भारत के सालिस्टर जनरल हुये) के चेम्बर में प्राप्त करने के पश्चात् 1956 से अद्यावधिपर्यन्त आप इलाहाबाद उच्च न्यायालय में वकालत कर रहे हैं। 1965 में इलाहाबाद उच्च न्यायालय बार एसोसियेशन के आप पुस्तकालय सचिव तथा 1987-88 एवं 1988-89 में "इलाहाबाद उच्च न्यायालय बार एसोसियेशन" के अध्यक्ष रहे। आप सिविल, संवैधानिक एवं चुनाव कानून के विशेषज्ञ के रूप में एक ख्यातिलब्ध अधिवक्ता हैं। आपने लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 पर एक व्याख्यात्मक पुस्तक की रचना भी की है, जो अपने क्षेत्र की एक महत्वपूर्ण कृति है।

विधि एवं न्याय के क्षेत्र में गहरी अनुरक्ति के साथ ही साथ विद्यार्थी जीवन से ही राजनीति में भी आपकी गहरी आस्था रही है। विद्यार्थी काल में भी आप "डेमोक्रेटिक स्टूडेन्ट्स यूनियन" के अध्यक्ष रहे एवं अन्यान्य विद्यार्थी आन्दोलनों में सक्रिय रूप में सम्बद्ध रहे। आपने 1946 में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के स्वयं सेवक के रूप में सार्वजनिक जीवन में पदार्पण किया। 1952 में जनसंघ की स्थापनाकाल से ही उसके कार्यकर्ता के रूप में कार्य करने लगे। 1953 में जनसंघ द्वारा चलाये गये कश्मीर आन्दोलन में भाग लिया और इसी सिलसिले में केन्द्रीय कारागार, नैनी में 3 दिन तक राजनैतिक बंदी के रूप में रहे।

यहीं से स्थानीय एवं प्रादेशिक आन्दोलनों में आपकी सक्रिय भागीदारी का जो क्रम प्रारम्भ हुआ, वह अभी भी चल रहा है ।

जनता पार्टी में जनसंघ के विलय के पश्चात् 1977 में जनता पार्टी के टिकट पर आप प्रथम बार इलाहाबाद के झूंसी विधान सभा क्षेत्र से निर्वाचित हुए तथा श्री राम नरेश यादव मंत्रिमण्डल में संस्थागत वित्त एवं बिक्री-कर मंत्री के रूप में 4-7-1977 से 11-2-1979 तक प्रदेश की सेवा करते रहे । अपने मंत्रित्वकाल में आपने उत्तर प्रदेश बिक्री-कर अधिनियम में कुछ मौलिक सुधार किया तथा बिक्री-कर न्यायाधिकरण की स्थापना की व्यवस्था की । पंजीयन एवं मनोरंजन कर विभागों में भी आपने कई महत्वपूर्ण सुधार किये । इस अवधि में स्टाम्प एवं न्यायालय शुल्क का कार्यभार भी आपके कर्तव्य का अंग रहा ।

1989 में भारतीय जनता पार्टी के टिकट पर इलाहाबाद शहर दक्षिणी विधान सभा क्षेत्र से आप दुबारा निर्वाचित हुए, 1991 में सम्पन्न हुए विधान सभा के सामान्य निर्वाचन में भारतीय जनता पार्टी के ही टिकट पर इलाहाबाद शहर दक्षिणी विधान सभा क्षेत्र से आप विधान सभा के लिए पुनः निर्वाचित हुए थे । प्रथम बार आप 30 जुलाई, 1991 को विधान सभा अध्यक्ष चुने गये थे और 15 दिसम्बर, 1993 तक इस पद पर सफलतापूर्वक कार्य करते रहे । 1993 एवं 1996 के मध्यावधि चुनाव में पुनः भारतीय जनता पार्टी के टिकट से निर्वाचित हुए हैं ।

1992-1993 में माननीय अध्यक्ष, लोक सभा द्वारा नियुक्त विधायिका न्यायपालिका सौहार्दपूर्ण संबंध बनाये रखने संबंधी समिति के आप सदस्य रहे हैं । वर्ष 1991–93 में कामनवेल्थ पार्लियामेन्ट्री एसोसियेशन के ब्रांच प्रेसिडेन्ट रहे । 38वें कामनवेल्थ पार्लियामेन्ट्री सम्मेलन में भाग लेने के लिए आपने फ्रेन्कफर्ट, बर्लिन, मियामी, नसाऊ (बहमास) टोरेन्टो, टोकियो, बीजिंग,हांगकांग तथा बैंकाक की यात्रा की ।

पर्यटन प्रेमी श्री त्रिपाठी अनेक शिक्षण, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक संस्थाओं से सम्बद्ध हैं ।

एक राजनेता के रूप में आप जनता को राजनैतिक प्रशिक्षण दिये जाने, विधान सभा द्वारा गम्भीर विचार-विमर्श के पश्चात् जनता की समस्याओं का निदान करने एवं विधान मण्डल द्वारा अपने सम्पूर्ण गरिमा के अनुरूप निष्ठा के साथ कार्य करने के पक्षधर रहे हैं ।

अब मैं नेता सदन और सबसे बड़े दल के नेता से निवेदन करूंगा कि वे माननीय श्री केशरी नाथ त्रिपाठी को ढूंढकर उन्हें अध्यक्ष पीठ पर आसीन करायें ।

(माननीय नेता सदन एवं कुंवर रेवती रमण सिंह ने श्री केशरी नाथ त्रिपाठी को ढूंढकर अध्यक्ष पीठ पर आसीन कराया)

(इस समय 3 बजकर 20 मिनट पर नवनिर्वाचित अध्यक्ष श्री केशरी नाथ त्रिपाठी पीठासीन हुए ।)

* मुख्य मंत्री (सुश्री मायावती)–

माननीय अध्यक्ष जी व इस सदन के सभी सदस्यगण, मुझे आज यह जानकर बड़ी खुशी हुई है कि हमारे जो पार्टियों के नेता हैं उन्होंने अध्यक्ष पद के लिये निर्विरोध इलेक्शन की बात कही, इसके लिये मैं आप सभी का शुक्रिया अदा करती हूं। उत्तर प्रदेश देश का सबसे बड़ा प्रदेश है, इस प्रदेश की तेरहवीं विधान सभा के पन्द्रहवें अध्यक्ष के रूप में आपके दूसरी बार निर्वाचित होने के अवसर पर मैं आपका हार्दिक अभिनन्दन करती हूं।

मैं आपके व्यक्तित्व के बारे में कुछ बात कहूं उससे पहले मैं इस सदन में विपक्ष के सदस्यगणों की जो कुछ आपत्तियां रही हैं या शिकवा-शिकायत रही हैं, जो मेरे सामने सदन में रखी गयी हैं, तो उन शिकवा-शिकायतों को दूर करना मैं सबसे पहले अपनी नैतिक जिम्मेदारी समझती हूं। जैसा कि अभी कुंवर रेवती रमण सिंह जी ने, स्वामी ओइमवेश जी ने जो कुछ अपनी शिकवा-शिकायतें रखी हैं उसके बारे में मैं सदन को अवगत कराना चाहूंगी।

कुंवर रेवती रमण सिंह जी ने कहा कि कल आल पार्टीज के लीडर्स की मीटिंग हुई, विधान सभा के अध्यक्ष पद के लिये जो नामिनेशन होना था, इस बारे में सभी पार्टियों के नेतागणों की मीटिंग बुलायी गयी। आपका यह कहना है कि इस मीटिंग में जो विपक्ष के नेता हैं उनको नहीं आमंत्रित किया गया। तो मैं कुंवर रेवती रमण सिंह जी को बताना चाहूंगी या जिन्होंने इस संबंध में आपत्ति की है उनको यह बताना चाहूंगी कि मैंने इसके बारे मे पूरी जानकारी की, मैंने कल भी इस संबंध में पूछा था कि विपक्ष के नेता को इन्वीटेशन गया तो मुझे यही बताया गया कि समाजवादी पार्टी के जो सदस्यगण हैं तो उनका यह कहना है कि हमारे नेता श्री मुलायम सिंह यादव जी हैं, लेकिन चाहे श्री मुलायम सिंह यादव जी कहें कि मैं अपनी पार्टी का नेता हूं चाहे उनकी पार्टी के सदस्यगण कहें कि हमारे नेता मुलायम सिंह यादव जी हैं तो मौखिक रूप से कहने से कोई काम होने वाला नहीं है, जब तक विधान सभा सचिव के पास लिखित लेटर नहीं आयेगा, स्पीकर साहब के पास लिखित में लेटर नहीं आयेगा तो किस को बुलायें यह हमारे सामने समस्या थी, लिखित में लैटर नहीं है कि समाजवादी पार्टी के नेता कुंवर रेवती रमण सिंह जी हैं, मुलायम सिंह यादव जी हैं या ओइमवेश जी है। यह तो आप लोगों को फैसला करना है कि आपका नेता कौन हैं? आप लोगों ने जो शिकवा-शिकायत की, उसका मैंने जवाब दिया। आगे आप लोगों को शिकवा-शिकायत का मौका न मिले, मेरी आप लोगों से दरख्वास्त है कि अपने नेता का चुनाव आप जल्दी कर लें कि आपकी पार्टी का नेता कौन है ताकि हम लोग उनसे लिखत-पढ़त कर सकें। इसके साथ ही मैं इस मौके पर लम्बी चौड़ी बात न कहते हुए माननीय अध्यक्ष जी के बारे में और उनके व्यक्तित्व के बारे में बताना चाहूंगी। आप लोगों को तो मालूम ही होगा और मुझे इस बात का एहसास है कि 3 जून, 1995 को जब मैं उत्तर प्रदेश की मुख्य मंत्री बनीं और उससे पहले जब 2 जून, 1995 को हम लोगों ने मुलायम सिंह जी से समर्थन वापस लिया तथा भारतीय जनता पार्टी के सहयोग से तथा दूसरे सहयोगी पार्टियों के सहयोग से जब हमने सरकार बनायी, उस समय जब हमारे समर्थन वापस लेने से मुलायम सिंह जी की सरकार अल्पमत में आ गई थी तो उस समय उनकी जिम्मेदारी बनती थी कि

---

* नोटः–वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

उन्हें नैतिकता के आधार पर इस्तीफा दे देना चाहिये था लेकिन उन्होंने इस्तीफा नहीं दिया । इतना ही नहीं, मैं किसी की आलोचना नहीं करना चाहती हूं, उस समय के जो अध्यक्ष थे,....

(कुंवर रेवती रमण सिंह के खड़े होने पर–व्यवधान)

श्री राम औतार शाक्य–

माननीय मुख्य मंत्री जी जो इस समय बात कह रही हैं वह सदन की गरिमा के अनुकूल नहीं है ।

श्री अध्यक्ष–

आप कृपा करके बैठ जाइये । आपकी बात माननीय मुख्य मंत्री जी ने मान ली है । मैंने मना कर दिया है ।

सुश्री मायावती–

माननीय अध्यक्ष जी, मैं अपनी बात रख रही थी । किसी के ऊपर टीका-टिप्पणी नहीं कर रही थी । मैं तो व्यक्तित्व के बारे में कुछ बताना चाह रही थी । मैं तो यह कह रही थी कि उस समय के जो अध्यक्ष जी थे, उन्होंने जिस तरह से सदन की गरिमा व संविधान की धज्जियां उड़ाई, वह सब आप लोगों के सामने है, उसकी उत्तर प्रदेश में ही नहीं पूरे देश ने निन्दा की थी । इसलिए मैं इस मौके पर बताना चाहती हूं कि जब हमारी सरकार आई बनी उस समय सदन को किस प्रकार चलाना है उसका सही मार्ग दर्शन मिला ।

(व्यवधान)

श्री अध्यक्ष–

आप लोग कृपया शांत रहें । माननीय कुंवर रेवती रमण सिंह जी बाद में इसका उत्तर दे देंगे ।

सुश्री मायावती–

तो मान्यवर, ऐसी विकट परिस्थितियों में उस समय आपका एक अच्छा मार्ग दर्शन मिला था । आपके बारे में बहुत कुछ सुना है । मान्यवर, हर पार्टी के लोगों की अलग-अलग विचारधारा होती है लेकिन जहां तक आपके व्यक्तित्व का सवाल है, हर पार्टी के लोगों को मैंने यह कहते हुए सुना कि आप साफ सुथरे, संविधान की परम्पराओं पर चलने वाले और निष्पक्ष निर्णय करने वाले व्यक्ति हैं और ऐसे बढ़िया अध्यक्ष बहुत कम देखे गये हैं । हर पार्टी के नेतागण और सदस्यगण आपके कार्य से बहुत खुश हैं और जो भी एक्टीविटीज चलेंगी उसमें वह पूरा सहयोग देंगे । मेरा भी सभी सदस्यगणों से अनुरोध है कि वे पूरा सहयोग देंगे । मान्यवर, इसके साथ ही मैं यह भी कहना चाहूंगी कि जब भी इलेक्शन होता है, विधान सभा के लिए, तो कुछ न कुछ नये सदस्य चुनकर आते हैं । इसके बाद भी ऐसे बहुत से माननीय सदस्य नये आये हैं और मुझे पूरा भरोसा है और जैसा कि आपके बारे में मुझे सुनने को मिला है, आप उन नये सदस्यों को पुराने सदस्यों के साथ-साथ सुनने का अवसर देंगे । मैं ज्यादा लम्बी-चौड़ी बात न कहकर इतना ही दरख्वास्त करूंगी कि आप सभी लोग हमें पूरा सहयोग देंगे । मैंने जो

नोटः–* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

बातें आपके सामने रखी हैं, हो सकता है उसमें कुछ आपको बुरी लगी होंगी कुंवर रेवती रमण सिंह जी को बुरी लगी स्वामी ओइमवेश जी को लगी होंगी, मैंने कोई बदले की भावना से यह बात नहीं कहीं थी अगर आपको बुरी लगी तो उसे न माने और अगर अच्छी लगी तो उसमें सुधार करने की कोशिश करें। इन्हीं शब्दों के साथ मैं आप सभी लोगों का शुक्रिया अदा करती हूं। धन्यवाद।

* कुंवर रेवती रमण सिंह–

माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं आपको बधाई देता हूं कि आप इस गरिमामय सदन के दोबारा अध्यक्ष चुने गये और एक इतिहास बनाया।

और जहां तक मुझे स्मरण है, खेर साहब के बाद आप दूसरे अध्यक्ष हैं, जो दो बार अध्यक्ष चुने गये हैं। जहां तक मुझे स्मरण है, उत्तर प्रदेश विधान सभा की अपनी गरिमा और परम्परायें रही हैं। उन परम्पराओं के अनुरूप, सबसे पहले अध्यक्ष, राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन जी हुये थे। उन्होंने पहला भाषण जो अध्यक्ष के रूप में दिया था, तो उन्होंने कहा था कि अगर विधान सभा का एक भी सदस्य मेरे खिलाफ खड़े होकर विधान सभा में अविश्वास प्रकट करेगा, तो मैं इस्तीफा दे दूंगा। टण्डन जी ने एक परम्परा बनायी थी, तब से उस परम्परा के अनुरूप इस विधान सभा में सभी माननीय अध्यक्षों ने उसका पालन करने की कोशिश की। आप भी रह चुके हैं। संयोग की बात है कि टण्डन जी भी इलाहाबाद के थे और आप भी इलाहाबाद के हैं। आप सहमत होंगे कि इलाहाबाद की एक गरिमा रही है, चाहे वह राजनैतिक क्षेत्र हो, चाहे सामाजिक क्षेत्र हो, और चाहे साहित्यिक क्षेत्र हो।

मुझे उम्मीद है, जैसा कि आपका जीवन काल प्रारम्भ से ही राजनीति में रहा है। आपने विद्यार्थी जीवन से लेकर और समय-समय पर आपने अपना योगदान हर क्षेत्र में दिया है। आप इलाहाबाद के लब्ध प्रतिष्ठित अधिवक्ता हैं। प्रदेश में आपको सम्मान की दृष्टि से हर आदमी देखता है। आप इस गौरवपूर्ण आसन पर विराजमान हुये हैं,तो उसकी गरिमा और परम्परा का आप निर्वहन करेंगे और ऐसी परम्परायें बनायेंगे, जबकि पूरे देश में परम्परायें ध्वस्त होती जा रही हैं और मर्यादायें टूटती जा रही हैं, तो आपका परम्परायें बनाने में योगदान होगा। ऐसी परम्परा रही है कि अध्यक्ष होने के बाद अध्यक्ष पार्टी से अपने को असम्बद्ध कर लेता है। आप करें या न करें, यह आपका विवेक है, लेकिन मैं चाहूंगा कि आप ऐसी रूलिंग दें जो इस बात का आभास न कराये कि आप सत्ता पक्ष को बचा रहे हैं, बल्कि जो सही परम्परा है, जो नियमावली कहती है, उसके अनुरूप ही आप अपना निर्णय दें। इन शब्दों के साथ मैं कुछ अपेक्षायें भी रखता हूं।

मान्यवर, नियमावली में दिया हुआ है कि 90 दिन का सदन होना चाहिये, लेकिन विगत 15-20 सालों से सदन की परम्परा बन गयी है कि सदन का उपवेशन 90 दिन क्या 40–45 दिन ही मुश्किल से होता है। मेरा मतलब है कि 90 दिन सदन चले। तो बहुत सी समस्या है, जो जन समस्यायें हैं, उनका निराकरण इस सदन में ही हो जाये। दूसरी बात मैं यह कहना चाहता हूं कि मा० मुख्य मंत्री जी ने माननीय मुलायम सिंह यादव जी का नाम इस सदन में लिया मा० मुलायम सिंह जी इस सदन के सदस्य नहीं हैं। जो इस सदन का सदस्य नहीं है, उसके बारे में आपकी टिप्पणी उचित नहीं है। तो मैं कहना

नोटः–* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

चाहता हूं कि इस परम्परा को आप देख लें, आप सदन की नेता हैं, उन परम्पराओं के निर्वाह का दायित्व आप पर है। आपने कहा कि आपकी पार्टी का नेता कौन चुना गया, पार्टी के दफ्तर में ही भिजवा दिया होता, और जो भी नेता होता वह शामिल हो जाता। जब सदन में अवरोध होता है, तो कई नेता बुला लिये जाते हैं। .....

वरिष्ठ लोगों को भी बुलाया जाता है। मैं आपको बताना चाहूंगा कि भविष्य में इस तरह की गलती न करने की कृपा करें।

एक और बात आपने कही, बड़ी फिलासफी की बात कही। 1993 और 1995 में क्या हुआ ? तो मैं बताना चाहता हूं कि डेढ़ महीने पहले आपने माननीय राज्यपाल को लिख कर दिया था कि हम बी० जे० पी० के साथ सरकार नहीं बनायेंगे और आज आपने उनके साथ सरकार बनाई है और अपने वचनों को भुला दिया है और इस प्रदेश के साथ और यहां की जनता के साथ मजाक किया है, विश्वासघात किया। (व्यवधान) उन्हीं सांप्रदायिक शक्तियों के साथ सरकार बनाई है। (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष–

कृपया शांत रहें।

* कुंवर रेवती रमण सिंह–

जब नेता सदन बोल रहा था तो हम शांति से सुन रहे थे, सच बात आपको कड़वी क्यों लग रही है ? आपने उसके उल्टे आचरण किया है और प्रदेश की जनता ने जो आप पर विश्वास किया था, उसके विपरीत आपने आचरण किया है। आपकी कथनी और करनी में बहुत बड़ा अंतर है। 15 और 85 की बात कह कर सामने चुनाव लड़ा उसके विपरीत आपने आचरण किया है। उस पर आप विचार करें। माननीय मुलायम सिंह यादव के बारे में आपने कहा, वह हमारे नेता हैं, इस सदन में नहीं हैं (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष–

माननीय कुंवर साहब विषयांतर हो रहे हैं (व्यवधान) कृपया शांत रहें।

कुंवर रेवती रमण सिंह–

मुलायम सिंह यादव जी हमारे नेता हैं इस बात का हमें गर्व है। एक और बात कह कर मैं अपनी बात समाप्त करूंगा। (व्यवधान)

श्री अध्यक्ष–

कृपया शांत रहें।

नोट:–* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

कुंवर रेवती रमण सिंह–

मान्यवर, आज प्रदेश के सामने बहुत सी ज्वलन्त समस्यायें हैं । गन्ना किसानों की समस्यायें हैं, आलू की समस्या हैं, पेयजल की समस्या है । आपने एक फरमान जारी कर दिया कि आलू खरीदा जायेगा । मैं आपको बताना चाहता हूं कि कहीं नहीं खरीदा जा रहा है । आपने 21 अप्रैल को इसके बाद सदन बुलाया है । आप तुरन्त सदन को बुला कर इसका निराकरण करें । यह मेरा आपसे आग्रह है । धन्यवाद ।

श्री प्रमोद कुमार–

माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय नेता सदन एवं मुख्य मंत्री जी ने तथा माननीय नेता समाजवादी पार्टी माननीय कुंवर रेवती रमण सिंह जी ने जो आपके बारे में जो विचार रखे हैं मैं उनसे अपने को प्रतिबद्ध करते हुये समझता हूं कि यह मेरे लिये अत्यंत गौरवशाली क्षण है जब आपको दुबारा इस पद पर आसीन होते देख रहा हूं । आपको इसके लिये बधाई देना चाहता हूं और शुभकामनायें भी देना चाहता हूं । यह अवसर खुशी का और शुभकामनाओं का है लेकिन मैं देख रहा हूं और मानता हूं कि अभी होली का असर लोगों पर बाकी है उसके बाद जब दुबारा बैठेगा तो अच्छे ढंग से चल सकेगा ।

मुझे आपके संदर्भ में इतना ही कहना है कि यह पद बड़ा महत्वपूर्ण है जिस पर आप आसीन हैं लेकिन यह कहने की धृष्टता मैं कर रहा हूं और निष्ठा के साथ कहना चाहता हूं कि बहुत से ऐसे लोग होते हैं जिन्हें प्रदेश और देश इस पद पर बैठने के बाद जानते हैं, बहुत से ऐसे लोग हैं जिनका सम्मान इस पद पर बैठने के बाद बढ़ता है लेकिन आप उन लोगों में से हैं जिनके इस पद पर बैठने से इस पद की गरिमा बढ़ेगी । मैं यह बहुत विश्वासपूर्वक इसलिये कह रहा हूं क्योंकि पहली बार 1991 में यहां पर जब आपने बैठकर गौरवान्वित किया है और पुनः आपको निर्विरोध निर्वाचित करके इस पद पर बैठाया है उसके लिये मैं आपको बधाई देना चाहता हूं और सम्पूर्ण सदन को भी बधाई देना अपना कर्तव्य समझता हूं । मान्यवर,विधान सभा अध्यक्ष पद के लिये आपको बधाई देना ही पर्याप्त नहीं है, इसके लिये सम्पूर्ण सदन को बधाई मिलनी चाहिये क्योंकि कुछ दिनों पहले यह लग रहा था कि कुछ माननीय सदस्य जो पहली बार चुन कर आये हैं वह बिना इस सभा मण्डप को देखे ही लौट जायेंगे और दुबारा चुनाव हो जायेगा ।

आपको इस पद पर बैठाकर अब यह सभी कम से कम 6 महीने के लिये बच गये हैं । यह सदन चलेगा 6 महीनों के बाद मैं गारंटी नहीं लेता क्योंकि जो विरोधाभास वाली सरकार होती है वह चला नहीं करती है । हम चाहेंगे कि मुख्य मंत्री जी 2-3-4 साल बनी रहें और इस पद पर मजबूती के साथ जमी रहें, हमारा समर्थन रहेगा । लेकिन यह जो उल्टा पल्टी का खेल है यह ज्यादा चलने वाला नहीं है । मैं आपके संदर्भ में दो बातें अवश्य कहना चाहता हूं । मैंने आपको अध्यक्ष के रूप में ही नहीं देखा है, मैंने आपको अधिवक्ता के रूप में भी देखा है । अधिवक्ता के रूप में आपके साथ इलाहाबाद उच्च न्यायालय मे कार्य करने का अवसर मिला था । मैं आपकी योग्यता को बहुत दिनों से जानता हूं । मुझे विश्वास है कि जिस प्रकार आप न्याय पालिका में सम्मान की दृष्टि से देखे जाते थे, न्यायिक पीठ पर बैठे हुए न्यायाधीशगण आपकी बातों का सम्मान करते थे और आपको सुनने के बाद कभी रिकार्ड चेक नहीं किया जाता था उसी प्रकार मुझे यहां विश्वास है कि आप यहां की गौरवशाली परम्पराओं को कायम

रखेंगे और आप बोलेंगे तो हमें ऐसा लगेगा कि सम्पूर्ण सदन बोल रहा है और कम से कम विपक्ष की आवाज बोल रही है।

अभी आदरणीय कुंवर रेवती रमण जी बोल रहे थे वह हमारे बड़े भाई हैं मुझसे ज्यादा अनुभवी हैं उन्होंने कहा कि आप श्री ए० जी० खेर के बाद दूसरी बार बैठे हैं। मैं समझता हूं कि इस पीठ पर स्व० पुरुषोत्तम दास टण्डन जी भी दो बार बैठ चुके हैं। दोनों की बड़ी ख्याति है। इस पीठ का इतिहास बड़ा गरिमामय रहा है। राजर्षि पुरुषोत्तम दास टण्डन जी से शुरू होकर श्री बी० आर० वर्मा पर आकर यह क्रम रुक गया था। मैं कहना चाहता हूं इस पीठ पर बैठे हुए लोगों ने गरिमा स्थापित की उसी तरह श्री बी० आर० वर्मा ने अपने अल्प समय और कम उम्र में लोगों का विश्वास जीत लिया था और एक स्वस्थ तथा शानदार परम्परा डाली। अब मैं एक बात और कहना चाहता हूं कि सभी अध्यक्ष जो यहां पर बैठे हैं उन सभी ने अपने कर्तव्यों का पालन किया है। आपका दायित्व और बढ़ जाता है, आप अध्यक्ष के रूप में यहां बैठे हैं आप सम्पूर्ण सदन के गार्जियन, संरक्षक के रूप में यहां बैठे हैं। वहां पर बैठकर एक तरफ तो आपको सरकार को चलाने में सहयोग देना है वहीं आपको यह नहीं भूलना है कि हम जो विरोधी दल के लोग यहां बैठे हैं उनके अधिकारों को आपको संरक्षण देना है। हम सब अपने कर्तव्यों का निर्वहन कर सकें उसके लिये आपको एक सुयोग्य वातावरण बनाना पड़ेगा।

मुझे याद आता है कि जब मुख्य मंत्री के रूप में श्री कल्याण सिंह जी उधर बैठे हुए थे तो गाजीपुर का एक प्रकरण यहां पर आया था। उस समय सरकार उसको बचाने में खड़ी हुई थी। हमारी संख्या नगण्य थी। मैंने आपको उस पीठ से ऐतिहासिक निर्णय लेते हुए देखा जहां आपने इन्क्वायरी का आर्डर ही नहीं दिया था बल्कि पूरा न्याय दिलाया था। कदाचित भविष्य में ऐसा अवसर आये तो हम आपसे उसी प्रकार न्याय की अपेक्षा करते हैं। मैं एक सुझाव देना चाहता हूं। वह सुझाव यह है, आप मुझे अपना मित्र मानेंगे, मैं मित्र के रूप में गलत सुझाव आपको नहीं दूंगा, मेरा सुझाव है कि आप उधर देखना बंद कर दें। आप आगे उधर ज्यादा देखना व सुनना बंद कर देंगे और हमारी बात ज्यादा सुनेंगे तो आप तीसरी बार भी अध्यक्ष बन जायेंगे। अगर आप हमारे अधिकारों की रक्षा नहीं करेंगे, उधर देखेंगे तो आपको कष्ट होगा। जो सरकार यहां बैठी है, मायावती जी हमारे साथ चुनावी गठबंधन करके लड़ी थीं। हमारा पूरा सहयोग उनके साथ है लेकिन जो उनके नये सहयोगी बैठे हैं उनके बारे में इतना ही कहना चाहूंगा कि यह पूरे समय किसी का साथ नहीं देते हैं। राखी का बन्धन तोड़ने में ज्यादा समय नहीं लगाते हैं। यह कितने दिन साथ देते हैं यह तो पता नहीं पर सहयोग दें।

मान्यवर, आप बड़े अच्छे और योग्य हैं। लेकिन एक अपवाद है जब आप इस कुर्सी पर बैठ जाते हैं तो पांच साल का कार्य पूरा नहीं कर पाते हैं। आप इस कुर्सी पर बैठे हैं तो पांच साल अवश्य चल जाय। मुझे पंडित जवाहर लाल नेहरू जी की एक उक्ति याद आ गई उसके साथ ही मैं अपनी बात समाप्त करूंगा। 8 मार्च, 1958 को तत्कालीन प्रधान मंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू जी ने कहा था कि "अध्यक्ष सदन का प्रतिनिधि है। वह सदन की गरिमा और उसकी स्वायत्तता का प्रतीक भी है और चूंकि वह राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करता है तो एक तरह से अध्यक्ष राष्ट्र की स्वायत्तता का और आजादी का प्रतीक बन जाता है। अतः यह उचित ही है कि अध्यक्ष का पद सम्मानित है। उसकी स्वायत्तता स्वतंत्र है। उस पर ऐसा व्यक्ति आसीन होना चाहिए जो असाधारण रूप से योग्य तथा अनुभवी हो।

मान्यवर, स्पीकर शब्द में एक विरोधाभास है स्पीकर एक मात्र सदस्य है जो वाद-विवाद में भाग नहीं लेता है। ऐसा क्षण कभी भी न आये कि आपको लाउडस्पीकर बनना पड़े। आप जो कहे वह हम सब स्वीकार कर सकें। मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि हमारा पूर्ण सहयोग सदन की कार्यवाही चलाने में रहेगा। मैं माननीय नेता सदन को भी पूर्ण विश्वास दिलाता हूं कि हम सब सदन की कार्यवाही में सहयोग करेंगे। इन्हीं शब्दों के साथ मैं एक बार फिर से आपको बधाई देता हूं।

*श्री कौकब हमीद–

मान्यवर, मैं धन्यवाद देता हूं कि श्री स्वामी ओइमवेश जी को कि उन्होंने पर्चा वापस लेकर एक ऐसा माहौल बना दिया जिसमें सब आराम और इत्मीनान के साथ निष्पक्ष स्पीकर का चयन कर सके। यह विधान सभा एक ऐतिहासिक विधान सभा है। इसने अपने ही देश में नहीं मगर और मुल्कों में भी प्रधान मंत्री दिये हैं। इसका गौरव बढ़ जाता है कि इतना ऐतिहासिक गौरवशाली इतिहास और किसी मुल्क का नहीं है तो कोई गलत बात न होगी। आज इतिहास बनता जाता है और इतिहासकार लिखते जाते हैं। 1991 में आपने एक इतिहास बनाया। हम लोगों ने या बहुत लोगों ने जिन्होंने सुना ही सुना था 1991 में देखा भी। हर आदमी हर विधायक आपके निर्णय से खुश था। आज आपको दोबारा अध्यक्ष चुने जाने पर खुश हैं। आपसे अच्छा बेहतर अध्यक्ष नहीं हो सकता। मान्यवर, मैं आपके दोबारा यहां पर अध्यक्ष चुने जाने के बारे में मुबारकबाद देता हूं और उम्मीद करता हूं कि जो परम्परा टूट रही है, खत्म हो रही हैं। जैसा कि हम पिछले कुछ सालों से देखते आ रहे हैं उन्हें दोबारा बरकरार रखें। जो विधायक नये आये हैं या जो पुराने हैं जिन्होंने पुराना अच्छा वक्त देखा है दोबारा अच्छे वातावरण में बैठकर आप जो भी निर्णय देंगे उसे मानेंगे। आपको अपने व अपने दल की ओर से बधाई देता हूं।

*श्री राम आसरे पासवान–

मान्यवर, मैं धन्यवाद देता हूं स्वामी ओइमवेश जी को कि उन्होंने अपना नाम वापस लिया। मान्यवर, आप न्याय के धनी रहे हैं। आप दोबारा अध्यक्ष की कुर्सी पर बैठे हैं। आप इस कुर्सी पर बैठते हैं तो ऐसा लगता है कि अध्यक्ष होने के बाद कुर्सी आपसे दब गई। सम्पूर्ण आदरणीय सदन के सभी सदस्यों की भावनाओं को आदर देने का ध्यान आपने दिया। मान्यवर, मुझे आशा और विश्वास है कि आप अपनी पवित्रता से इस आदरणीय सदन को अच्छी दिशा देंगे। जो इस सदन की परम्परायें और मर्यादायें हैं वह पूरे हिन्दुस्तान में कायम रहेंगी। इन्हीं शब्दों के साथ मैं आपका अभिनन्दन करता हूं।

नोट :–* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

श्री रामजग–

माननीय अध्यक्ष जी, हमारे सदन की नेता माननीया मुख्य मंत्री मायावती जी, कुंवर रेवती रमण जी, हमारे कांग्रेस आई के नेता प्रमोद कुमार जी, जनता दल के नेता, किसान कामगार पार्टी के नेतागण एवं सम्मानित साथियों आज मैं इस विधान सभा का अध्यक्ष चुनने पर अध्यक्ष जी को इस मायने में बधाई देना चाहता हूं कि जब मैं विधान सभा का सदस्य नहीं था तो आपकी बहुत तारीफ सुनता था। आज आप निर्विरोध चुने गये हैं आपकी जिम्मेदारी बहुत बड़ी है। आप उस विधान सभा के अध्यक्ष हैं जिस पर पूरे प्रदेश की आंखें लगी हुई हैं। आप विधान सभा में आयेंगे आपके सामने विकट परिस्थितियां आयेंगी।

आज जब माननीय मुख्य मंत्री मायावती जी बोल रही थी तो विपक्ष की ओर से कोई शोर नहीं हुआ सत्ता पक्ष की ओर से शोर शुरू हो गया उस समय मुझे बड़ा कष्ट हुआ और कष्ट इसलिये हुआ कि यह संसदीय क्षेत्र में अच्छी बात नहीं है। यह बात कहना चाहूंगा कि पूरे प्रदेश में यह परम्परा रही है इस कुर्सी पर बहुत से लोग विराजमान भी हुए हैं। आप इस कुर्सी पर विराजमान हुए हैं मुझे बहुत खुशी है। मुझे आशा है सदन में जब भी विकट परिस्थितियां आयेंगी आप सदन को कड़ाई से चलायेंगे। सभी माननीय सदस्य हैं कुछ सत्ता पक्ष के सदस्य हैं कुछ विपक्ष के हैं माननीय अध्यक्ष जी बैठे हुए हैं अगर कोई माननीय सदस्य गलत ढंग से बोल रहा है तो उसको आप रोकेंगे। सत्ता पक्ष की तरफ से भविष्य में ऐसे मौकों पर सत्ता का दुरुपयोग नहीं होना चाहिए। ऐसी हमको उम्मीद है। अन्त में मैं अपनी तरफ से और अपनी पार्टी भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी) की ओर से आपका हार्दिक अभिनन्दन करता हूं।

श्री रघुवर दयाल वर्मा–

मानीनय नेता सदन, माननीय नेता प्रतिपक्ष, माननीय नेता कांग्रेस पार्टी, श्री ओइमवेश, कौकब हमीद साहब, मानीनय नेता जनता दल, माननीय नेता कम्युनिस्ट पार्टी, ने आपके संदर्भ में आपके व्यक्तित्व के संदर्भ में जो बातें यहां रखी हैं उनसे मैं अपने को सम्बद्ध करता हूं। आज उत्तर प्रदेश की विधान सभा धन्य है कि आप जैसे व्यक्ति को अपने सदन का अध्यक्ष बनाया। आप जैसा योग्य व्यक्ति, निष्ठावन व्यक्ति, चरित्रवान व्यक्ति, आप जैसे व्यक्ति को विधान सभा की मर्यादाओं को सदन में प्रतिपादित करने का कार्य, माननीय सदन द्वारा आपको सौंपा गया है। मुझे उम्मीद है कि आप जैसे व्यक्तित्व के धनी व्यक्ति निश्चित रूप से विधान सभा की मर्यादा को मर्यादा के रूप में बांधकर इस सदन की प्रतिष्ठा को बढ़ाने का काम करेंगे। जो इसी कार्यकाल में सदन में ऐसी परिस्थितियां उत्पन्न हुई कि सदन हुड़दंग का अड्डा बन गया सदन में अपनी बात कहने में, डंडे और बल का प्रयोग होता है यह संविधान और विधान की गरिमा के अनुकूल नहीं होता है।

नोट :–* वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

जिस पद पर आप बैठे हैं उस पद पर कई योग्य व्यक्ति बैठे हैं। मैं उम्मीद करता हूं कि आप जैसा व्यक्तित्व निश्चित रूप से परम्पराओं का निर्वहन करेगा। आपके निर्देशन में जो पारदर्शिता होगी उससे हमारे सदन ही नहीं सम्पूर्ण देश की विधान सभा में यह गूंज होगी कि आपके निर्देशन में पारदर्शिता है और आपके निर्णय पारदर्शी हैं जिससे आगे आने वाले लोग उनका अनुसरण करेंगे। मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि इस सदन को चलाने में हमारे दल की तरफ से और माननीय साथियों की तरफ से आपको पूरा-पूरा सहयोग मिलेगा और सभी को आपके प्रति पूरा विश्वास है। मेरी शुभकामनाएं आपके साथ हैं। मेरी प्रार्थना है कि इस सदन को चलाने में आप अपनी गरिमा के अनुकूल कार्य करें।

श्री अध्यक्ष–

माननीया मुख्य मंत्री जी कुछ कहना चाहती हैं।

श्री जगदम्बिका पाल–

मान्यवर, आपने अभी हमारा नाम बुलाया था।

श्री अध्यक्ष–

माननीया मुख्य मंत्री जी अपनी बात कह लें उसके बाद आप बोलें।

सुश्री मायावती–

माननीय अध्यक्ष जी मुझे दुबारा बोलने के लिए वैसे तो खड़ी नहीं होना चाहिए था। लेकिन बहुजन समाज पार्टी के बारे में जो गलतफहमी सदन में पैदा की गयी है, उसको सदन के बीच में स्पष्ट करना मैंने मुनासिब समझा। बहुजन समाज पार्टी के बारे में यह कहा गया कि बहुजन समाज पार्टी ने गवर्नर साहब को यह लेटर लिखा था कि हम भारतीय जनता पार्टी के साथ मिलकर सरकार नहीं बनायेंगे। मैं इस संबंध में आपके माध्यम से उस गलतफहमी को दूर करना चाहूंगी। गवर्नर साहब को राष्ट्रपति शासन के दौरान जो भी लेटर किसी भी पार्टी की तरफ से लिखे गये हैं उनका सबूत तो गवर्नर साहब के यहां रिकार्ड में मिलेगा। लेकिन जहां तक मेरा सवाल है हमने इस किस्म का कोई लेटर गवर्नर साहब को नहीं लिखा था। हमने केवल एक ही लेटर विधान सभा चुनाव के नतीजे के बाद लिखा था उसमें हमने लिखा था कि बहुजन समाज पार्टी की नेता चुनने के बाद विधायकों की ओर से और बहुजन समाज पार्टी की ओर से उत्तर प्रदेश में किसी भी पार्टी को चाहे वह यूनाइटेड फ्रंट हो या उसका कोई घटक हो या कोई और पार्टी हो। बहुजन समाज पार्टी किसी भी पार्टी को सरकार बनाने के लिए समर्थन नहीं देगी। यदि बहुजन समाज पार्टी को कोई भी पार्टी सरकार बनाने के लिए समर्थन देती है तो बहुजन समाज के हित में सरकार बनाने के लिए पार्टी गम्भीरता पूर्वक सोच विचार करेगी। यह लेटर हमने उन हालात में लिखा था। लेकिन अक्टूबर के महीने से जब लेटर लिखा गया था अब के हालात में काफी अन्तर आ गया था। उत्तर प्रदेश के जो हालात बिगड़े हैं, उत्तर प्रदेश की जो कानून व्यवस्था बिगड़ी है, उत्तर प्रदेश में जुल्म ज्यादतियां, अत्याचार, अन्याय जो बड़े पैमाने पर बढ़ा है। गुण्डागर्दी, माफियागर्दी जो बढ़ी है, वह उत्तर प्रदेश की जनता को अच्छी प्रकार से मालूम है। माननीय अध्यक्ष जी आपको बताना चाहूंगी कि हम लोगों ने 1995 में भारतीय जनता पार्टी के सहयोग से सरकार क्यों

नोट :– * वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

बनायी थी ? हमें मालूम है कि हर पार्टी की अलग-अलग विचारधारा होती है, विचारधारा अलग-अलग होने के बावजूद भी जब जनता का सवाल आता है, दबे-कुचले समाज का सवाल आता है, देश के सबसे बड़े प्रदेश के हित का सवाल आता है, बहुजन समाज का सवाल आता है तो उस समय उत्तर प्रदेश या किसी भी प्रदेश में यदि इस किस्म की परिस्थिति पैदा हो जाये तो उस प्रदेश की जनता को सबसे प्रिय मानकर हमें फैसला लेना चाहिए ।

(समय 4 बजकर 5 मिनट)

वर्ष 1995 में जब उत्तर प्रदेश के हालात खराब थे तो हमने उस मौके पर दबे कुचले के हित में और उत्तर प्रदेश की जनता के हित में भारतीय जनता पार्टी से सहयोग लेकर सरकार बनाने का फैसला लिया, लेकिन उस दौरान सरकार ज्यादा दिन नहीं चली । बार-बार यह कहा जाता है कि यह सरकार कितने दिन चलेगी । मैं आपके माध्यम से सदन को यह बताना चाहूंगी कि जब हम उत्तर प्रदेश की बात कहते हैं तो हम कहते हैं कि उत्तर प्रदेश देश का सबसे बड़ा प्रदेश है और इस प्रदेश से 425 एम० एल० ए० चुनकर आते हैं । काफी बड़ा परिवार है । एक बड़े परिवार को जब लेकर चलते हैं तो कभी-कभी मनमुटाव हो जाता है, वह हमेशा नहीं रहता है , कुछ समय बाद खत्म हो जाता है और पुनः प्यार-मोहब्बत पैदा हो जाता है । 1995 में भारतीय जनता पार्टी ने सरकार बनाने के लिए सहयोग दिया, बढ़िया सहयोग दिया, लेकिन जिस प्रकार एक बड़े परिवार में कभी-कभी मन-मुटाव हो जाता है और मन-मुटाव खत्म होने पर पुनः प्यार-मोहब्बत व भाई-चारे का वातावरण पैदा हो जाता है । मन-मुटाव खत्म होने पर यह भाई-चारे का वातावरण पैदा हुआ है । जहां तक वर्तमान स्थिति का सवाल है, मैं बताना चाहूंगी कि 1995 में हमने भारतीय जनता पार्टी से बाहर से सहयोग लेकर सरकार बनाने का फैसला लिया, उस समय दूसरी पार्टी ने भी सहयोग दिया ।

अक्टूबर के महीने में जब चिट्ठी लिखी थी वह कुछ और थी । अक्टूबर के बाद स्थितियां बिगड़ी हैं, सभी को मालूम है कि उत्तर प्रदेश में माफियागर्दी, गुण्डागर्दी बढ़ी है । इसीलिए उत्तर प्रदेश के दबे-कुचले लोगों के हित में सरकार बनाने का फैसला लिया । यह बात मैंने स्पष्ट करना मुनासिब समझा है । माननीय प्रमोद कुमार जी की दिल से शुक्रिया अदा करती हूं कि उन्होंने जो मुझे सहयोग देने का आश्वासन दिया है । मैं उनसे उम्मीद करती हूं कि आगे भी सहयोग मिलता रहेगा ।

श्री राम औतार शाक्य–

मान्यवर, माफियागर्दी और गुण्डागर्दी की परिभाषा माननीय मुख्य मंत्री जी से करवा दें ।

श्री अध्यक्ष–

आप बैठ जायें, परिभाषा किसी दिन सदन में करवा देंगे ।

[मा० नेता अखिल भारतीय कांग्रेस (तिवारी) श्री जगदम्बिका पाल का नाम पुकारे जाने पर ।

श्री जगदम्बिका पाल–

श्रीमन्, आपने इस निर्वाचन के अवसर पर तिवारी कांग्रेस का उल्लेख किया था और तिवारी कांग्रेस की तरफ से पुकारा था ।

नोट :– * वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया ।

[सत्ता पक्ष के सदस्यों ने श्री जगदम्बिका पाल के बोलने पर आपत्ति करते हुए कहा कि तिवारी कांग्रेस का विलय अखिल भारतीय कांग्रेस (आई) में हो गया है, इसलिए श्री जगदम्बिका पाल, तिवारी कांग्रेस के नेता नहीं रहे।]

श्री अध्यक्ष–

अभी विधान सभा में विलय के बारे में कोई निर्णय नहीं है इसलिए श्री जगदम्बिका पाल जी बोल रहे हैं।

(सत्ता पक्ष के सदस्यों की ओर से व्यवधान किये जाने पर)

*श्री जगदम्बिका पाल–

मान्यवर, हम लोग नेता सदन का बहुत धैर्यपूर्वक सुन रहे थे, कम से कम इन लोगों को मेरे बोलने में व्यवधान नहीं करना चाहिए।

श्री अध्यक्ष–

विधान सभा के अभिलेखों में जो संख्या जिस दल की है, उसके अनुसार मैं बुला रहा हूं।

श्री जगदम्बिका पाल–

मान्यवर, माननीय सदस्य बहुत पुराने सदस्य हैं। आपने मुझे विधान सभा सचिवालय के अभिलेखों तथा अपनी व्यवस्था के परिपेक्ष्य में बुलाया है। मैं सभी दलों के नेताओं द्वारा आपके प्रति दी गयी शुभकामनाओं से अपने को सम्बद्ध करता हूं। मुझे तिवारी कांग्रेस के नेता के रूप में पुकारा गया है, इस संबंध में मैं सम्मानित सदन के समक्ष निवेदन करना चाहता हूं कि विगत 17 फरवरी, 1997 को अखिल भारतीय इन्दिरा कांग्रेस (तिवारी) के चारों सदस्य श्री हरि शंकर तिवारी, श्री श्याम सुन्दर शर्मा, श्री के० सी० सिंह और स्वयं मैं, चारों ने संयुक्त रूप से लिखकर तत्कालीन माननीय अध्यक्ष जी को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में विलय करने का प्रार्थना-पत्र प्रस्तुत किया था, उस समय भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के हमारे सम्मानित नेता प्रमोद कुमार जी भी थे। आज हम चारों सदस्य यहां उपस्थित हैं, आज एक बार फिर हम सब लोग भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में विलय करने की घोषणा करते हैं। इस संबंध में केवल एक अनुरोध है, आज ही आप इस कुर्सी पर बैठे हैं, मैं अपने इन चारों लोगों के विलय की सूचना आपके पास लिखित रूप में भिजवा रहा हूं, इस पर आप सबसे पहले अपनी व्यवस्था देने की कृपा करें। आप इससे पूर्व भी जब इस कुर्सी पर बैठे हैं, आप निष्पक्ष रहे हैं और अपनी निष्पक्षता के कारण आपने इस सदन का विश्वास अर्जित किया है। इस मामले में आपके निर्णय में एक बार फिर निष्पक्षता प्रतीत होगी, ऐसा हम सबका विश्वास है। मैं लिखित रूप से आपके पास भिजवा रहा हूं, कृपया व्यवस्था देने की कृपा करें। अन्त में एक बार पुनः मैं आपको अपनी बधाई देता हूं।

श्री अध्यक्ष–

विधान सभा सचिवालय में इस आशय की सूचना पहले प्राप्त हुई थी, परन्तु मेरे पूर्वाधिकारी माननीय श्री बी० आर० वर्मा जी ने इस बात को देखते हुए कि नई विधान सभा गठित होने वाली है

नोट :– * वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

उस पर कोई फैसला नहीं लिया था और आपकी उस प्रार्थना को विचाराधीन रखा था, अब उचित समय आने पर इस संबंध में फैसला किया जायेगा।

श्री प्रमोद कुमार–

मान्यवर, मैं सम्पूर्ण सदन को साक्षी बना रहा हूं और कहना चाहता हूं कि यही उचित समय है, आप इस संबंध में कृपया अपनी व्यवस्था देने की कृपा करें।

श्री अध्यक्ष–

आपने अपनी बात कह दी है, मैं नियमावली के अनुसार निर्णय लूंगा।

(श्री राजेन्द्र सिंह तथा श्री प्रीतम राम का नाम पुकारे जाने पर वह सदन में उपस्थित नहीं थे)

आवास एवं नगर विकास मंत्री (श्री लाल जी टण्डन)–

मान्यवर, पहले इस बात का फैसला हो जाय कि माननीय प्रमोद कुमार और नरेश अग्रवाल में कांग्रेस का नेता कौन है ?

श्री प्रमोद कुमार–

मान्यवर, मैं टण्डन जी को बधाई देना चाहता हूं कि इन्होंने अटल जी का सहारा लेकर माननीय कल्याण सिंह को चित्त कर दिया है, इसके लिये मैं इन्हें बधाई देता हूं।

श्री गौरीशंकर (एडवोकेट)–

माननीय अध्यक्ष जी, आज हम सब अभिभूत हैं आपको इस आसन पर विराजमान देखकर, और आभारी हूं अपने साथी ओइमवेश जी का जिन्होंने अपना नाम वापस लेकर पुरानी परिपाटी को निभाया है इसके लिये मैं उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करता हूं। श्रीमन्, आप इस पद पर विराजमान हैं यह मेरे लिये गौरव की बात इसलिये भी है कि मैं एक वकील हूं और एक ब्रदर लाइयर को कितनी खुशी हो रही है उसको मैं शब्दों में व्यक्त नहीं कर सकता हूं। श्रीमन्, आप पुराने पार्लियामेन्टेरियन हैं और बहुत अनुभवी हैं इतने वर्षों में मुझे भी आपका सानिध्य मिला है। मेरा यह छठा टर्म है मैंने आपके साथ रहकर जो सीखा है, जो पाया है उसके लिये मैं एक श्लोक में अपनी बात कहना चाहता हूं—

"विद्वत्वं च नृपत्वं च नैव तुल्य कदाचन्।
स्वदेशे पूज्यते राजा विद्वान् सर्वत्र पूज्यते॥"

(पंचतंत्र 2/59)

अर्थात विद्वान में और राजा में कोई समता नहीं हो सकती क्योंकि राजा की पूजा उसके राज में ही होती है जबकि विद्वान की पूजा सब जगह होती है। यह श्लोक आपके व्यक्तित्व के अनुरूप है इसको मैं प्रासंगिक समझता हूं। श्रीमन्, पुरुषोत्तम जी के बाद, खेर साहब के बाद जो हमने पढ़ा है और जो इस माननीय सदन के पुराने साथी हैं उन्होंने जो जानकारी दी है और जो मेरा अनुभव है उसमें इन दो महान व्यक्तित्वों के बाद आप इस पद पर विराजमान हैं। पहली बार 1991 में आप निर्वाचित हुए थे और उसके बाद 1993 तक रहे और उस समय जैसे आपने इस पद को सुशोभित किया था और उसके बाद पुनः इस पर आसीन हुए हैं यह हम सबके लिये सौभाग्य की बात है। श्रीमन् हमारे जो पुराने व्यक्तित्व

हैं उनके द्वारा जो रास्ता दिखाया गया है आप न केवल उन पर चलेंगे बल्कि कीर्तिमान स्थापित करेंगे। आपने विदेश में भी जाकर इस सदन की गरिमा को बढ़ाया है।

श्रीमन्, 1974 में जब मैं सबसे कम उम्र का विधायक चुनकर यहां आया था तो हमारी क्यूरीसिटी थी जानने की कि पहली बार हाउस बैठता है तो क्या होता है और वह दिन मुझे आज भी याद है। उसी तरह से जो विधायक पहली बार चुनकर आये हैं और इस कार्यवाही में भाग ले रहे हैं उनके मन में स्पन्दन हो रहा होगा, उनको कितना अच्छा लग रहा होगा इसकी अनुभूति मुझे 1974 से है। श्रीमन्, आप न केवल एक अच्छे वकील हैं बल्कि एक अच्छे पार्लियामेन्टेरियन भी हैं। मुझे अच्छी तरह से याद है जब आप 1977 में संस्थागत वित्त विभाग के मंत्री थे तो पहली बार सेल्स टैक्स के सरलीकरण की समिति बनी थी उसका मैं एक सदस्य रहा हूं और मैंने आपके कार्य को देखा है। स्वयं जब मैं मंत्री रहा हूं तो आपने मेरा मार्गदर्शन किया है उसको मैं भूल नहीं सकता हूं। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से एम० ए०, एल-एल० बी० करने के बाद उस विश्वविद्यालय का रिश्ता भी आपके साथ है।

श्रीमन्, मैं नहीं चाहता था कि आज के दिन कोई टीका टिप्पणी होती, आज के दिन यह व्यंग्यबाण न चलते तो अच्छा ही होता लेकिन व्यंगबाण दोनों ओर से चले और ऐसा लग रहा था कि दूसरे दिन हाउस ही नहीं होगा अभी तो गवर्नर साहब का अभिभाषण होगा और उसके बाद हाउस होगा उसमें यह बातें कही जा सकती थी और जितना आक्रोश है वह निकाला जा सकता था। आज का दिन तो समरसता और प्यार मोहब्बत को जोड़ने का था। भर्तृहरि जी का एक श्लोक मैं आपको समर्पित कर रहा हूं--

"रे रे चातक सावधानमनसा मित्र क्षणं श्रूयता-
मम्भोदा बहवो बसन्ति गगने सर्वेऽपि नैतादृशाः।
केचिद्वृष्टिभिरार्द्रयन्ति वसुधां गर्जन्ति केचिद्वृथा-
यंयं पश्यसि तस्य तस्य पुरतोमा ब्रूहिदीनंवचः॥"

भर्तृहरि जी का यह श्लोक आज आपके परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिक है और इसे इसीलिये उद्धृत किया है अन्योक्ति के रूप में इस व्याख्या के साथ कि हे मित्र पपीहा सावधान मन से थोड़ी देर सुन। आकाश में बहुत से बादल हैं लेकिन सभी एक से नहीं हैं। कुछ तो वर्षा करके पृथ्वी को गीला कर देते हैं और कुछ व्यर्थ की गर्जना करते हैं।

इसलिए हे मित्र पपीहा। तुम जिस जिस को देखते हो उस उस के आगे दीन वाणी मत कहो – अर्थात तुम केवल उस भरे हुए बादल से याचना करो जो तुम्हें स्वाति की बूंदें दे सके और तुम्हारी प्यास बुझा सके।

आज हम सदस्यगण जो जन समस्या रूपी प्यास से प्यासे हैं उस प्यास हेतु हम आप जैसे भरे हुए बादल की ओर याचक दृष्टि से देख रहे हैं कि जन समस्याओं रूपी हमारी प्यास बुझाने के लिए जहां आवश्यक होगा वहां अपनी अंकुश लगायेंगे। क्योंकि हाथी जब रास्ते से भटकता है तो महावत उस पर अंकुश लगाता है। इस हाउस के महावत आप हैं और जो निरंकुश होगा वह पर अंकुश प्रभावी होगा ऐसी हमें आशा है। वैसे तो आज के दिन किसी को भी किसी पर प्रहार नहीं करना चाहिए था क्योंकि

आज प्रथम बार मिले हैं और आज समरसता और प्यार मुहब्बत के माहौल में ही हम जाना चाहते हैं लेकिन फिर भी जिन्होंने अपने व्यंग्य वाण छोड़े हैं उनसे मुखातिब होकर यह शेर पढ़ रहा हूं--

"वक्त को जिसने नहीं समझा,
उसे मिटना पड़ा है,
बच गया तलवार से तो फूल से कटना पड़ा है,
चाहे जितनी ही बड़ी हो चाहे जितनी ही कड़ी हो,
हर नदी की राह से चट्टान को हटना पड़ा है।"

इन्हीं शब्दों के साथ मैं सभी को साधुवाद देता हूं जिन्होंने सहयोगी माहौल बनाया है और आपके प्रति आदर भाव व्यक्त करते हुए हार्दिक बधाई देता हूं।

श्री अध्यक्ष–

श्री गौरी शंकर जी के लिये माननीय मुख्य मंत्री जी आभारी होंगी कि आपने इस सारे सदन के हाथी बना दिया।

(हंसी)

कोई निर्दलीय सदस्य अपने विचार रखना चाहें।

श्री दिवाकर विक्रम सिंह–

मान्यवर, व्यवस्था का प्रश्न है।

श्री अध्यक्ष–

आज के कार्यक्रम में व्यवस्था की बात कहां से आ गयी ?

श्री दिवाकर विक्रम सिंह–

सभी दल के नेता, माननीय नेता सदन और माननीय नेता प्रतिपक्ष सभी इस अवसर पर अपनी बधाई देते हैं। श्रीमन्, मैं यह जानना चाहूंगा कि उत्तर प्रदेश विधान सभा में समाजवादी गौरी शंकर नाम से कोई दल स्थापित हो गया है।

श्री अध्यक्ष–

जैसे आपने बोलने की इच्छा प्रकट की थी वैसे ही गौरीशंकर जी ने इच्छा प्रकट की थी।

मैं आज इस सारे सदन के प्रति अपना आभार प्रकट करता हूं कि मुझे दूसरी बार इस सदन का निर्विरोध अध्यक्ष निर्वाचित किया गया।

इधर पिछले कुछ महीनों में, जो माननीय सदस्य निर्वाचित होकर आये थे, सबके मन में आशंकायें व्याप्त थीं कि विधान सभा का सत्र होगा या नहीं होगा। राष्ट्रपति शासन का कार्य काल बढ़ाने की मंजूरी संसद ने दी थी सर्वोच्च न्यायालय का क्या निर्णय होगा, अनेक प्रश्न सभी विधायकों के मन में थे। परन्तु, राजनीति के घटना क्रम के तेजी का मुकाबला करना मुश्किल है। इतनी तेजी से घटना क्रम ने मोड़ लिया कि आज हम सब विधान सभा के सदस्य के रूप में इस सदन में बैठे हुए हैं।

संसदीय व्यवस्था की विधान सभायें और संसद मेरुदण्ड होती हैं। यदि हम संसद और विधान सभाओं में अपने दायित्वों का पूर्णरूपेण निर्वहन करें तो इसमें कोई संदेह नहीं कि जनआकांक्षायें एक ओर मुखरित होकर सामने आयेंगी और जो भी सत्तारूढ़ दल होगा वह उन्हीं आकांक्षाओं की पूर्ति करने

नोट :– * वक्ता ने भाषण का पुनर्वीक्षण नहीं किया।

का प्रयास करेगा । आपने अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम मुझे बनाया इसलिये मैं विशेष रूप से आभारी हूं ।

मैं स्वामी ओइमवेश जी का भी आभारी हूं कि आज उन्होंने अपने नामांकन को वापस लिया और जो एक स्वस्थ परम्परा चली आ रही थी उसको सुदृढ़ करने का कार्य किया । मुझे विश्वास है कि परिपाटी का कालान्तर में सभी दलों के द्वारा पालन किया जायेगा । एक स्थापित परम्परा के रूप में हम इसे स्वीकार कर रहे हैं और भावी पीढ़ी भी इसको स्वीकार करेगी । विधान सभायें गम्भीर विचार-विमर्श का माध्यम होती हैं । यहां विवाद नहीं होता । वैचारिक मत-भिन्नतायें हो सकती हैं । अपने-अपने दलों के दृष्टिकोण के हिसाब से माननीय सदस्यगण अपने विचार यहां पर व्यक्त करते हैं । किसी के मन में किसी के प्रति कटुता के भाव नहीं रहते हैं । उनके मन में जो दायित्व का अहसास होता है, उसी दायित्व को वह यहां पर मुखरित करने का प्रयास करते हैं ताकि सत्तापक्ष उनकी बात को समझे । साथ ही सत्तारूढ़ दल भी इस बात का प्रयास करता है कि विपक्ष भी उनके मनोभावों को और उनके दृष्टिकोण को समझे इसी से निकलता है समस्या का हल ।

विगत कुछ वर्षों में, न केवल उत्तर प्रदेश विधान सभा में बल्कि कुछ अन्य स्थानों पर भी कुछ ऐसी घटनायें हुई जो संसदीय लोकतंत्र के समर्थकों के लिए चिन्ता का विषय बन गयी है । मैं घटना का उल्लेख करना नहीं चाहता हूं । मैं केवल इतना कहना चाहता हूं कि जो लोग संसदीय परम्परा में विश्वास करते हैं, उनको एक कदम आगे आकर, संसदीय लोकतांत्रिक परम्परा को स्थायित्व प्रदान करने के लिए विधान सभा को संविधान विधि तथा प्रक्रिया नियमावली के अनुसार संचालन की दृष्टि से सहयोग करना चाहिए । इसके लिये सबके सहयोग की आवश्यकता होती है । मुझे विश्वास है कि इसमें आप सब लोगों का सहयोग मिलेगा । इस समय सदन में लगभग 180 माननीय सदस्य पहली बार चुनकर आये हैं । जो हमारे पुराने माननीय सदस्य हैं, मुझे पूरा विश्वास है कि वह उनको पूरा मार्गदर्शन देने का प्रयास करेंगे । विधान सभा की कार्यवाही किस प्रकार चले और किस प्रकार से चलाना चाहिए, इसका क्या उद्देश्य हैं और उनके दायित्व क्या हैं, इसका भली-भांति ज्ञानबोध उन्हें करायेंगे तभी हम विधान सभा की कार्यवाही सफलतापूर्वक संपादित कर सकते हैं ।

प्रत्येक संस्था का एक संस्थागत अनुशासन होता है । वह तभी रहता है जब जिन नियमों के अन्तर्गत उसका गठन हुआ है, उसी के अनुसार उसका कार्य होता है । कभी-कभी उसके अनुपालन में किसी का दृष्टिकोण किसी से टकरा जाय या किसी से सहमत न हो तो ऐसी स्थिति में उसे संस्थागत अनुशासन का अंग मानकर उसे स्वीकार कर लेना चाहिए । उससे किसी को कोई तकलीफ भी नहीं होगी और न ही कुंठा जागेगी ।

अध्यक्ष के रूप में कुछ काल तक पहले भी मुझे कार्य करने का अवसर मिला था । उसका उल्लेख करना इस समय उचित प्रतीत नहीं होता है परन्तु आप सभी लोगों से मैं कुछ अपेक्षा भी करूंगा । आप लोगों ने मुझे जो शुभकामनायें दी हैं और सहयोग भी दिया है, उसी शुभकामनाओं और सहयोग की मैं आप लोगों से अपेक्षा करूंगा ताकि अपने दायित्वों का निर्वहन करने में मैं सफल व सक्षम हो सकूं ।

निष्पक्षता किसी भी अध्यक्ष की प्रथम आवश्यकता होती है । मैं इसके लिए पूरा प्रयास करूंगा । हो सकता है कभी किसी मौके पर कुछ अप्रिय निर्णय लेना पड़े, हो सकता है उससे विपक्ष सहमत न हो या सत्ता पक्ष सहमत न हो, उसे आप मेरी मजबूरी नियमों की मजबूरी और अनुशासन की मजबूरी समझें । मैंने हमेशा दलगत राजनीति से ऊपर उठकर कार्य किया है । कभी-कभी दलगत राजनीति और अनुशासन–दोनों में विरोधाभास हो सकता है । जब उनमें विरोधाभास होगा तब मेरा प्रयास होगा कि मैं संस्थागत अनुशासन का पालन करूं ।

कुंवर रेवती रमण सिंह जी ने अपेक्षा की है कि सदन अधिक दिनों तक कार्य करे । जब हम विपक्ष में बैठते थे तो यही आग्रह करते थे और जब सत्ता पक्ष में थे तो स्वयं सरकार से इस बात का आग्रह करते थे कि सदन अधिक से अधिक दिनों तक चले । नियमों के हिसाब से तो कम से कम 90 दिन सदन चलना चाहिए । मुझे विश्वास है कि माननीय मुख्य मंत्री जी अपनी कर्मठता और कार्यशैली का प्रमाण इस सदन को देने का प्रयास करेंगी । सदन अगर अधिक दिनों तक कार्य करता रहेगा तो प्रदेश की अनेक समस्यायें हल हो जायेंगी और माननीय सदस्यों को भी अपने विचार व्यक्त करने का अवसर मिल जायेगा । समय-समय पर प्रदेश की जानकारी भी मिल जायेगी । इसलिये मेरा भी निवेदन है कि इस दिशा में आप विचार करें । वैसे निर्णय तो आपको ही लेना है ।

कभी-कभी ऐसे भी उत्तेजना के क्षण आते हैं जब लोग भावुक हो जाते हैं । गम्भीर और संवेदनशील विषयों पर चर्चा होती है । मैं आपसे आग्रह करूंगा कि कृपया इस सदन में उत्तेजना का वातावरण पैदा न होने दें । यदि हम ऐसा न होने देंगे तो हम सब गम्भीर क्षणों में कोई ठोस निर्णय लेने की स्थिति में होंगे । मेरा आपसे अनुरोध है कि कृपया सौहार्द्रपूर्ण और भाईचारे का वातावरण इस सदन में रखें । मेरे सामने बहुत से पुराने और अनुभवी सदस्य बैठे हुए हैं और उन्हें नियमों की पूरी जानकारी है मैं उनसे आग्रह करूंगा कि वे मुझे पूरा सहयोग देंगे । मैं आप सभी लोगों का आभार प्रकट करता हूं । विभिन्न दलों के माननीय नेताओं का, नेता सदन, श्री राम आसरे पासवान जी, गौरीशंकर जी, प्रमोद कुमार जी, कुंवर रेवती रमण सिंह जी और अन्य सभी लोगों का कि आपने मुझे दोबारा निर्विरोध अध्यक्ष निर्वाचित किया । लोगों के मन में जो आशंकायें थीं वह निर्मूल साबित हुई हैं । मुझे विश्वास है कि हम सब अपना कार्यकाल पूरा करेंगे ।

श्री प्रमोद कुमार–

मान्यवर, अगली बैठक कब होगी ?

श्री अध्यक्ष–

इसकी घोषणा कर दी जायेगी । अब हम उठते हैं ।

इसके बाद सदन की बैठक 4 बजकर 32 मिनट पर समाप्त हुई ।

लखनऊ :
दिनांक 27 मार्च, 1997

प्रेम चन्द्र सक्सेना,
सचिव, विधान सभा,
उत्तर प्रदेश ।

पी० एस० यू० पी०–एल० 55 विधान सभा (106)–1997–813(डी० टी० पी०) ।